یں

از پردمن کرشن ڈرامہ ایم اے
راناپرتاپ باغ دہلی

وانی کے سہارے آجا
جمنا کے کنارے آجا

دیش میں ہے نوحہ کناں
موج ہے مصروف فغاں

یا تیرے بیاروں کی
وحشت کے اوزاروں کی

ی کو بنادے آکر
ں کو بجھادے آکر

پٹرولیم کی طاقت

کا نیا نشان اور گھریلو استعمال کیلئے
وقت کی بچت
کیلئے ایسوگیس استعمال کریں

ایسوگیس

گھریلو استعمال کیلئے جموں و کشمیر میں
تیار ہو رہا ہے
دھواں سے نجات، کوئلہ اور لکڑی کے مقابلے
میں کافی سستا

ے گیس امیرا کدل سرینگر



از جن کو اپد

برہم ستیم اور جگت مِتھیا
آتما ہوں میں کبھی فانی
ساری مخلوقات کی ہوں جان
"یوگ مایا" ہے میری شکتی کا
قادر مطلق ہوں روح کائنا
یوگ مایا سے جنم لیتا ہوں
جنم کے بندھن میں آسکتا
اسم اعظم "اوم" میرا نام
فعل ہوں فاعل ہوں اور مفعو
میں نہیں دنیا میں پابن
یوگ مایا کی ہے مجھ میں اب
ابتدا اور انتہا میری
میری یکساں ہر بشر پر ہے
چھو نہیں سکتے ہیں مجھ کو حر
نور افشاں مجھ سے ہیں شمس و
حاضر و ناظر اگر رہتا ہوں
ہوں پرے ادراک کی سرحد سے

روپ کی ج
"یوگ مایا

तथा व्यापकसुखस्वरूपहो ॥ तथा निरंजनहो अर्थात् अज्ञान रूपअंजनतैंरहितहो ॥ तथा सर्वत्रपरिपूर्णहो ॥ तथा द्वैतभावतैंरहितहो ॥ तथा सर्वउपाधियोंतैंरहितहो ॥ तथा अमृतरूपहो ॥ अर्थात् मोक्षस्वरूपहो इति ॥ इसश्लोकविषे श्रीब्रह्मानैं श्रीकृष्णभगवान्कूंसर्वउपाधियोंतैंरहित आत्मारूप तथाब्रह्मरूप कह्याहै॥ और इसीप्रकारका श्रीकृष्णभगवान्कास्वरूप श्रीशुकदेवनैंभी स्तुतिप्रसंगतैंविनाहीं कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्लोक ॥ (सर्वेषामेववस्तूनांभावार्थोभवतिस्थितः॥ तस्यापि भगवान्कृष्णःकिमतद्वस्तुरूप्यताम् ॥) अर्थयह ॥ जितनैंकीकार्यरूपवस्तुहैं ॥ तिनसर्वकार्यरूपवस्तुवोंका जोभावार्थहै ॥ क्या सत्तारूपपरमार्थस्वरूपहै सो भावार्थ कार्यरूपकरिकैजायमानसोपाधिकब्रह्मविषैहीं स्थितहै ॥ काहेतैं सिद्धांतविषे कारणकीसत्तातैंपृथक् कार्यकीसत्ता अंगीकारहैनहीं ॥ जैसे कुंडलकंकणादिकभूषणरूपकार्योंकी सुवर्णरूपकारणकीसत्तातैं पृथक्सत्ता हैनहीं॥ तथा जैसे घटशरावादिककार्योंकी मृत्तिकारूपकारणकीसत्तातैं पृथक्सत्ता हैनहीं ॥ तैसे इसप्रपंचरूपकार्यकीभी तिससोपाधिकब्रह्मरूपकारणकीसत्तातैं पृथक्सत्ता हैनहीं ॥ यहवार्त्ता (तदनन्यत्वमारंभणशब्दादिभ्यः) इससूत्रकेव्याख्यानविषे श्रीभाष्यकारोंने विस्तारतैं कनथकरीहै ॥ और तिसकारणरूपसोपाधिकब्रह्मकाभी सोसत्तारूपभावार्थ श्रीकृष्णभगवान्है ॥ काहेतैं सो सोपाधिककारणब्रह्म निरुपाधिकब्रह्मविषेहीं कल्पितहै ॥ और जोजोकल्पितवस्तुहोवैहै सोसोअधिष्ठानतैंपृथक्होवैंनहीं ॥ जैसे रज्जुविषेकल्पितसर्प रज्जुरूपअधिष्ठानतैं पृथक्नहींहै ॥ और श्रीकृष्णभगवान्हीं सर्वकल्पनावोंकाअधिष्ठानरूपहोणेतैं परमार्थसत्यनिरुपाधिकब्रह्मरूपहै ॥ यातैं यहनिरुपाधिकब्रह्मरूप श्रीकृष्णभगवान्हीं तिसकारणरूपसोपाधिकब्रह्मका परमार्थसत्तारूप भावार्थहै ॥ ऐसेअधिष्ठानब्रह्मरूप श्रीकृष्णभगवान्तैंअन्य कोईभीवस्तु पारमार्थकहैनहीं ॥ किंतु सोपरब्रह्मरूपश्रीकृष्णभगवान्हीं एक पारमार्थिकहै इति ॥ इसीहींअर्थकूं श्रीभगवान्नैं ईहां (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) इसवचनकरिकैकथनकऱ्याहै इति ॥ अथवा (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) इसश्लोकका यहदूसराअर्थकरणा ॥ शंका ॥ हेभगवन् जोपुरुष जिसदेवताकाध्यानकरेहै ॥ सोपुरुष तिसीहींदेवताभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ यातैं तुमाराभक्त तुमारेभावकूंतौ प्राप्त होवैंगा ॥ परंतु सोतुमाराभक्त ब्रह्मभावकूं कैसेप्राप्तहोवैंगा ॥ किंतु ब्रह्मभावकूं नहींप्राप्तहोवैंगा ॥ जिसकारणतैं आप तिसब्रह्मतैंजुदाहीं हो ॥ ऐसीअर्जुनकी शंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् आपकूं ब्रह्मरूपताकथनकरेहै (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहमिति) हेअर्जुन सर्वउपाधियोंतैंरहित परमात्मादेवरूप शुद्धब्रह्मका पारिअवसानरूप प्रतिष्ठा मैंहींहूं ॥ अर्थात् मेरेतैं सोपरब्रह्म भिन्ननहींहै ॥ किंतु मैंहीं परब्रह्मरूपहूं ॥ तथा अव्ययरूपअमृतकीभी मैंहीं प्रतिष्ठाहूं ॥ तहां सर्वअनर्थकीनिवृत्तिपूर्वक परमानंदकीप्राप्तिरूप जोमोक्षहै ताकानाम अमृतहै ॥ सोमोक्षरूपअमृत किसीप्रकारकरिकैभी नाशहोत नहीं ॥ यातैं सोमोक्षरूपअमृतअव्यय कह्या जावैहै ॥ ऐसेविनाशतैंरहितमोक्षरूपअमृतकाभी मैंपरमात्मादेवविषेहीं पारिअवसानहै ॥ अर्थात् मैंपरमात्मादेवकी अभेदरूपकरिकैप्राप्तिहीं मोक्षहै ॥ तथा

शाश्वतधर्मकाभी मैंहीं प्रतिष्ठाहूं ॥ तहां नित्यमोक्षहैफलजिसका ऐसाजो ज्ञाननिष्ठारूपधर्महै ताकानाम शाश्वतधर्महै ॥ ऐसामोक्षरूपफलकीप्राप्तिकरणेहारा ज्ञान निष्ठारूपधर्मभी मैंपरमेश्वरविषेहीं परिअवसानवालाहै ॥ अर्थात् तिसज्ञाननिष्ठारूपधर्मकरिकै मैंपरमात्मादेवतैंभिन्न दूसराकोईवस्तु प्राप्तहोतानहीं ॥ किंतु मैंपरमा त्मादेवहीं तिसज्ञाननिष्ठारूपधर्मकरिकै प्राप्तहोताहूं ॥ तथा ऐकांतिकसुखकीभी मैंहीं परिअवसानरूपप्रतिष्ठाहूं ॥ अर्थात् परमानंदस्वरूपहोणेतैं मैंपरमात्मादेवहीं सर्वमुमुक्षुजनोंकूं अभेदरूपकरिकैप्राप्तहोणेयोग्यहूं ॥ मैंपरमात्मादेवतैंभिन्न दूसराकिंचित्मात्रभीसुख प्राप्तहोणेयोग्यनहींहै ॥ तहांश्रुति ॥ (योवैभूमातत्सुखंनाल्पे सुखमस्ति) ॥ अर्थयह ॥ देशकालवस्तुपरिच्छेदतैंरहित सर्वत्रव्यापक परमात्मादेवहीं सुखरूपहै परिच्छिन्नपदार्थोंविषे किंचित्मात्रभी सुखनहींहै इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंपरमात्मादेव इसप्रकारकाहूं ॥ तिसकारणतैं मैंपरमात्मादेवका अनन्यभक्त ब्रह्मभावकूंहींप्राप्तहोवैहै यहपूर्वउक्तअर्थ युक्तहींहै इति ॥ और किसी टीकाविषेतौं (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ इसगीताकेचतुर्थअध्यायविषे (एवंबहुविधायज्ञावितताब्रह्मणोमुखे) इसवचनविषेस्थित ब्रह्म शब्दकरिकै वेदकाहीं ग्रहणकऱ्याहै ॥ यातैं ईहांभी ब्रह्मशब्दकरिकै वेदकाहीं ग्रहणकरणा ॥ ऐसेब्रह्मनामावेदका मैंपरमात्माहीं प्रतिष्ठाहूं ॥ अर्थात् सर्ववेदोंका तात्पर्यकरिकै परिअवसानकास्थान मैंपरब्रह्महींहूं ॥ तहांश्रुति ॥ (सर्वेवेदायत्पदमामनंति) ॥ अर्थयह ॥ कर्म उपासना ज्ञान यहतीनकांडरूप ऋगादिकसर्ववेद साक्षात् वापरंपराकरिकै जिसपरब्रह्मरूपपदकूंहीं कथनकरैहैं इति ॥ कैसाहैसोवेद अमृतहै ॥ अर्थात् कर्म ब्रह्म इनदोनोंकेप्रतिपादनद्वारा मोक्षरूपअमृतका साधनहै ॥ पुनःकैसाहैसोवेद अव्ययहै ॥ अर्थात् उत्पत्तिविनाशतैंराहितहोणेतैं सोवेदअपौरुषेयहै ॥ अपौरुषेयहोणेतैंहींसोवेदअप्रामाण्यशंकारूपकलंकतैंरहितस्वतः प्रमाणरूपहै ॥ और शाश्वतधर्मकाभी मैंहीं प्रतिष्ठाहूं ॥ अर्थात् जैसे काम्यधर्म स्वर्गादिकफलकीप्राप्तिकरिकै नाशहोइजावैहै ॥ तैसे भगवत्विषेअर्पणकऱ्याहुआ यह नित्यधर्म नाशहोवैनहीं ॥ तथा विविदिषादिकोंकीउत्पत्तिद्वारा मोक्षरूपशाश्वतफलकाहेतुहोवैहै ॥ यातैंभगवत्विषेअर्पणकऱ्याहुआ सोनित्यधर्म शाश्वतधर्म कह्याजावैहै ॥ ऐसेशाश्वतधर्मकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य परमफलरूपभी मैंपरमात्मादेवहींहूं ॥ और विषयसंबंधजन्यसुखतैंरहित ऐसाजो स्वरूपभूतमोक्षसुखहै ताका नाम ऐकांतिक सुखहै ॥ ऐसेऐकांतिकसुखकाभी मैंपरमात्मादेवहीं प्रतिष्ठाहूं अर्थात् पराकाष्ठारूपहूं ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंपरमात्मादेव इसप्रकारकाहूं ॥ तिसकारणतैं ऐसेमैंपरमात्मादेवकूंचिंतनकरणेहारा अधिकारीजन ब्रह्मभावकूंहीं प्राप्तहोवैहै यहपूर्वउक्तअर्थ युक्तहींहै इति ॥ २७ ॥ ❋ ॥ इतिश्रीमत्परम हंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वामिउद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां चतुर्दशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १४ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ ॥ छ ॥

श्र

ॐश्रीगणेशायनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥ अथपंचदशाध्यायप्रारंभः ॥ तहां पूर्वचतुर्दशेअध्यायविषे संसारबंधनकेहेतुभूत सत्त्वादिकतीनगुणोंको कथनकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं मैंपरमेश्वरकेअनन्यभक्तियोगकरिकै तिनसत्त्वादिकतीनगुणोंकेअतिक्रमणपूर्वक ब्रह्मभावरूपमोक्ष प्राप्तहोवैहै यहअर्थ श्रीभगवान्नैं (मांचयोऽव्यभिचारेणभक्तियोगेनसेवते ॥ सगुणान्समतीत्यैतान् ब्रह्मभूयायकल्पते) ॥ इसवचनकरिकैकथनक न्या ॥ तहां तैंमनुष्यकेभक्तियोगकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं ब्रह्मभावकीप्राप्ति कैसेहोवैगी किंतुनहींहोवैगी ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहूए श्रीभगवान् आपणेविषे ब्रह्मरूपताकेबोधनकरणेवासतै (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहममृतस्याव्ययस्यच ॥ शाश्वतस्यचधर्मस्यसुखस्यैकांतिकस्यच) ॥ यहसूत्ररूपश्लोक कथनकरताभया ॥ इसी सूत्रभूतश्लोककेअर्थकूं विस्तारतैंवर्णनकरणेहारा यहवृत्तिरूप पंचदशाअध्याय श्रीभगवान्नैं प्रारंभकरीताहै ॥ जिसकारणतैं श्रीकृष्णभगवान्केवास्तवस्वरूप कूंजानिकै तिसके निरतिशयप्रेमरूपभजनकै गुणातीतहुए यहअधिकारीलोक किसीभीप्रकारकरिकै ब्रह्मभावरूपमोक्षकूं प्राप्तहोवैं इति ॥ तहां (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठा हम्) इत्यादिक भगवान्केवचनकूंश्रवणकरिकै मैंअर्जुनकेतुल्य मनुष्यरूप यहकृष्ण ब्रह्मकाभीमैंप्रतिष्ठाहूं इसप्रकारकावचन कैसेकहताहै इसप्रकारकेविस्मयकरि कैयुक्तहुए तथापूछणेयोग्यअर्थकीअस्फूर्तिरूपअप्रतिभाकरिकैतथालज्जाकरिकै किंचित्मात्रभी पूछणेकूंअसमर्थहुए ऐसेअर्जुनकूं जानिकरिकै कृपाकरिकै ता अर्जुनकेप्रति आपणेस्वरूपकेकहणेकी इच्छाकरताहुआ श्रीभगवान् कहेहै ॥ तहां संसारतैंविरक्तपुरुषकूंहीं परमेश्वरकेवास्तवस्वरूपकेज्ञानविषे अधिकारहै ॥ वैराग्यतैंरहितपुरुषकूं ताज्ञानविषेअधिकारहैनहीं ॥ यातैं प्रथम वैराग्य संपादनकऱ्याचाहिये ॥ तहां पूर्वअध्यायविषे कथनकऱ्या जो परमेश्वरकेअधीनवर्त्तणे हारेप्रकृतिपुरुषकेसंयोगकाकार्यरूप संसारहै ॥ तिससंसारकूं वृक्षरूपकल्पनाकरिकै वर्णनकरेहैं ॥ तिससंसारतैंवैराग्यकीप्राप्तिवासतै ॥ जिसकारणतैं सोवैराग्य भी तिसपूर्वउक्तगुणातीतपणेका उपायरूपहींहै ॥

(मू० श्लो०) श्रीभगवानुवाच ॥ ऊर्ध्वमूलमधःशाखमश्वत्थंप्राहुरव्ययम् ॥ छंदांसियस्यपर्णानियस्तंवेदसवेदवित् ॥ १ ॥ ऊर्ध्व मूलम् । अधःशाखम् । अश्वत्थम् । प्राहुः । अव्ययम् । छंदांसि । यस्य । पर्णानि । यः । तम् । वेद । सः । वेदवित् ॥ १ ॥ (इतिप दच्छेदः) ॥ हेअर्जुन श्रुतिस्मृतियां इससंसारवृक्षकूं ऊर्ध्वमूलवाला तथाअधःशाखावाला तथाअश्वत्थ तथाअव्यय कहेहै जिस संसारवृक्षके कर्मकांडरूपवेद पर्णहैं तिससंसाररूपवृक्षकूं जोपुरुष जानताहै सोपुरुषहीं वेदवेत्ताहै ॥ १ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहसंसाररूपवृक्ष कैसाहै ऊर्ध्वमूलहै ॥ तहां स्वप्रकाशपरमानंदरूपहोणेतैं तथानित्यहोणेतैं सर्वतैंउत्कृष्ट कारणरूप जोब्रह्महै ताकानाम

ऊर्ध्वहै ॥ सोऊर्ध्वमूल क्या कारण जिसका ताकानाम ऊर्ध्वहैमूलहै ॥ अथवा सर्वसंसारकेबाधहुएभी बाधतैंरहित तथासर्वसंसारभ्रमकाअधिष्ठान ऐसाजोब्रह्महै ताकानाम ऊर्ध्वहै ॥ सोऊर्ध्वहै आपणीमायाशक्तिकरिकै मूल क्या कारण जिसका ताकानाम ऊर्ध्वमूलहै ॥ पुनःकैसाहै यहसंसाररूपवृक्ष अधःशाखहै ॥ ईहां (अधः) इसशब्दकरिकै पश्चात्उत्पन्नहुए कार्यरूपउपाधिवाले हिरण्यगर्भादिकोंका ग्रहणकरणा ॥ और जैसेलोकप्रसिद्धवृक्षकीशाखा पूर्वपश्चिमादिकदिशावोंविषे प्रसृतहोवैहैं ॥ तैसे तेहिरण्यगर्भादिकभी नानादिशावोंविषे प्रसृतहुएहैं ॥ यातैं तेहिरण्यगर्भादिकहैं प्रसिद्धशाखावोंकीन्यांई शाखा जिसकी ताकनाम अधःशाखहै ॥ पुनःकैसाहैयहसंसाररूपवृक्ष अश्वत्थहै ॥ तहां जोवस्तु यहवस्तु अगलेदिनाविषेरहैंगा याप्रकारके विश्वासके योग्यनहींहोवै ताकानाम अश्वत्थहै ॥ इसप्रकारकेविश्वासकेअयोग्यहोणेतैं यहसंसारवृक्ष अश्वत्थहै ॥ पुनःकैसाहैयहसंसाररूपवृक्ष अव्ययहै ॥ अर्थात् अनादिअनंतरूप जो यहदेहादिकोंकाप्रवाहहै तिसका यहसंसाररूपवृक्ष आश्रयहै ॥ तथा आत्मज्ञानतैंविना अन्यकिसीउपायकरिकै इससंसारवृक्षका उच्छेदहोतानहीं ॥ यातैं यहसंसारवृक्ष अव्ययहै ॥ इसप्रकारतैं श्रुतिस्मृतियां इसमायामयसंसारवृक्षकूं ऊर्ध्वमूलवाला तथाअधःशाखावाला तथाअश्वत्थरूप तथा अव्ययरूप कथनकरेहैं ॥ तहांश्रुति ॥ (ऊर्ध्वमूलोऽर्वाक्शाखएषोऽश्वत्थःसनातनः ॥) अर्थयह ॥ सर्वतैंउत्कृष्टजोब्रह्महै ताकानाम ऊर्ध्वहै ॥ सोऊर्ध्वहै मूल क्या कारण जिसका ताकानाम ऊर्ध्वमूलहै ॥ और अर्वाक् नाम निकृष्टकाहै ऐसेनिकृष्ट कार्यरूपउपाधिवाले हिरण्यगर्भादिकहैं ॥ अथवा महत्तत्त्व अहंकार पंचतन्मात्रा इत्यादिकहैं ॥ तेहिरण्यगर्भादिक अथवा महत्तत्त्वअहंकारादिक प्रसिद्धशाखाकीन्यांई शाखाहैं जिसकी ताकानाम अर्वाक्शाखहै ॥ ऐसाऊर्ध्वमूल तथाअर्वाक्शाख यहसंसाररूप अश्वत्थवृक्ष सनातनहै इति ॥ इत्यादिक श्रुतियां कठवल्लीउपनिषदविषे पठनकरीहैं ॥ तहां इसश्रुतिविषेस्थितजो अर्वाक्शाखः यहपदहै ॥ सोपद मूलश्लोकविषेस्थित अधःशाखं इसपदकेसमानअर्थवालाहै ॥ और श्रुतिविषेस्थितजो सनातनः यहपदहै ॥ सोपदमूलश्लोकविषेस्थित अव्ययं इसपदकेसमानअर्थवालाहै ॥ इसीप्रकारके इससंसाररूपवृक्षकूं स्मृतिवचनभी कथनकरेहैं ॥ तहांस्मृति ॥ (अव्यक्तमूलप्रभवस्तस्यैवानुग्रहोत्थितः ॥ बुद्धिस्कंदमयश्चैवइंद्रियान्तरकोटरः ॥ १ ॥ महाभूतविशाखश्चविषयैःपत्रवांस्तथा ॥ धर्माधर्मसुपुष्पश्चसुखदुःखफलोदयः ॥ २ ॥ आजीव्यःसर्वभूतानांब्रह्मवृक्षःसनातनः ॥ एतद्ब्रह्मवनंचैवब्रह्माचरतिसाक्षिवत् ॥ ३ ॥ एतच्छित्त्वाचभित्त्वाचज्ञानेनपरमासिना ॥ ततश्चात्मगतिंप्राप्यतस्मान्नावर्त्ततेपुनः ॥ ४ ॥) अर्थयह ॥ अव्याकृतहैनामजिसका ऐसाजो मायाविशिष्टब्रह्महै ताकानाम अव्यक्तहै ॥ सोअव्यक्तहीं मूल कहीये कारणरूपहै ॥ ऐसे अव्यक्तरूप मूलतैंहै प्रभव क्या उत्पत्ति जिसकी ताकानाम अव्यक्तमूल प्रभवहै ॥ ऐसा यहसंसाररूपवृक्षहै ॥ तथा तिसअव्यक्तरूपमूलकेअनुग्रहतैंहींयहसंसारवृक्ष उत्थितहुआहै ॥ अ

र्थात् तिसअव्यक्तरूपमूलकेदृढपणेकरिकैहीं यहसंसाररूपवृक्ष महान्‌वृद्धिकूंप्राप्तहुआहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षकीशाखा स्कंधतैं उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे बुद्धितैंहीं इससंसारके नानाप्रकारकेपरिणाम उत्पन्नहोवैहैं ॥ इसप्रकारके समानधर्मपणेकरिकै यहबुद्धिहीं स्कंधरूपहै ॥ ऐसेबुद्धिरूपस्कंधवालाहोणेतैं यहसंसारवृक्ष बुद्धिस्कंधमय कह्याजावैहै ॥ और जैसे प्रसिद्धवृक्षकेभीतर छिद्ररूपकोटरहोवैहैं ॥ तैसे इससंसारवृक्षविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकेछिद्रहीं कोटररूपहैं इति ॥ १ ॥ और जैसे यहप्रसिद्धवृक्ष अनेकशाखावोंवालाहोवैहै ॥ तैसे यहसंसाररूपवृक्षभी आकाशादिकपंचमहाभूतरूप विविधप्रकारकीशाखावोंवालाहै ॥ अथवा विशाखा यहशब्द स्तंभकावाचकहै ॥ यातैं महाभूतहैं विशाख क्या स्तंभ जिसके ताकानाम महाभूतविशाखहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवृक्ष पत्रोंवालाहोवैहै ॥ तैसे यह संसाररूपवृक्षभी शब्दस्पर्शादिकविषयरूपपत्रोंवालाहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षविषे पुष्पहोवैहैं ॥ तथा तिनपुष्पोंतैं फल उत्पन्नहोवैहैं ॥ तैसे यहसंसारवृक्षभी धर्मअधर्मरूपपुष्पोंवालाहै ॥ तथा तिनधर्मअधर्मरूपपुष्पोंतैंउत्पन्नहुए सुखदुःखरूपफलोंवालाहै इति ॥ २ ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धवृक्ष पक्षीआदिकोंका उपजीव्यहोवैहै ॥ तैसे यहसंसाररूपवृक्षभी सर्वभूतप्राणीयोंका उपजीव्यहै ॥ जिसतैंउपजीवनहोवै ताकानाम उपजीव्यहै ॥ और इससंसारवृक्षकूं परमात्मादेव ब्रह्मनैं आश्रितकऱ्याहै ॥ यातैं इससंसारवृक्षकूं ब्रह्मवृक्ष कहेहैं ॥ और यहसंसारवृक्ष आत्मज्ञानतैंविना दूसरेकिसीभीउपायकरिकै छेदनकऱ्याजातानहीं ॥ यातै यहसंसारवृक्ष सनातन कह्याजावैहै ॥ और यह संसारवृक्ष जीवात्मारूपब्रह्मका भोग्यहै ॥ यातैं इससंसारवृक्षकूं ब्रह्मवन कहेहैं ॥ ऐसेसंसाररूपवृक्षविषे शुद्धब्रह्मतौं साक्षीकीन्यांई विराजमानहै ॥ अर्थात् इससंसारकेगुणदोषोंकरिकै सोब्रह्म लिपायमानहोवैनहीं इति ॥ ३ ॥ ऐसेसंसारवृक्षकूं अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकेदृढआत्मज्ञानरूपखड्गकरिकै छेदनकरिकै तथाभेदनकरिकै अर्थात् मूलसहितनाशकरिकै यहअधिकारीपुरुष आत्मारूपगतिकूंप्राप्तहोइकै तिसआत्मरूपमोक्षतैं पुनःआवृत्तिकूं प्राप्तहोतानहीं इति ॥ ४ ॥ इत्यादिकअनेकस्मृतियां इससंसारकूं वृक्षरूपकरिकै वर्णनकरेहैं ॥ यद्यपि लोकविषे ऐसाकोईवृक्ष प्रसिद्धहैनहीं ॥ जिसकामूलतौं ऊपरिहोवै और शाखा नीचैहोवैं ॥ तथापि श्रीगंगाजीकेतरंगोंकरिकैहन्यमानहुआ जोगंगाकाऊंचातीरहै ॥ तिसतीरतैंवायुने नीचैपतनकऱ्याजो महान्‌अश्वत्थकावृक्षहै तिसवृक्षका मूलतौं ऊपरिहोवैहै ॥ और शाखा नीचैहोवैहैं ॥ तिसीअश्वत्थवृक्षकूं उपमानकरिकै श्रीभगवान्‌नैं इससंसाररूपवृक्षकूं ऊर्ध्वमूलवाला तथाअधःशाखावाला कह्याहै ॥ यातैं इसभगवान्‌केवचनविषे किंचित्‌मात्रभी विरोधकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ पुनःकैसाहै यहमायामय संसाररूपअश्वत्थवृक्ष ॥ वेदरूपछंद जिसके पर्णहैं ॥ अर्थात् तत्त्ववस्तुका आवरकहोणेतैं अथवा संसाररूपवृक्षका रक्षकहोणेतैं यहकर्मकांडरूप ऋग् यजुष् साम अथर्वण च्यारिवेद प्रसिद्धपर्णोंकीन्यांई जिससंसाररूपवृक्षके पर्णरूपहैं ॥ तात्पर्ययह ॥ जैसे प्रसिद्धपर्ण वृक्षकेपरिरक्षणवासतैहींहोवैहैं ॥ तैसे यहकर्मकां

डरूपवेदभी इससंसाररूपवृक्षकेपरिरक्षणवासतेहींहैं ॥ काहेतैं तेकर्मकांडरूपवेद धर्म अधर्म तथातिनोंकाकारण तथातिनोंकाफल इनच्यारोंकूंहीं प्रकाशकरेहैं ॥ ताकरिकै तेकर्मकांडरूपवेद इससंसाररूपवृक्षका परिरक्षणकरेहैं ॥ यातैं तिनकर्मकांडरूपवेदोंविषे संसाररूपवृक्षकीपर्णरूपता युक्तहींहैइति ॥ हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष इसप्रकारके मूलसहित मायामय अश्वत्थरूप संसारवृक्षकूं जानताहै ॥ सोईहींअधिकारीपुरुष वेदवित्है ॥ अर्थात् कर्मकांडरूपवेदका जोकर्मरूपअर्थहै ॥ तथा ज्ञानकांडरूपवेदका जोब्रह्मरूपअर्थहै ॥ तिस कर्मरूपअर्थकूं तथाब्रह्मरूपअर्थकूं सोईहींअधिकारीपुरुष जानताहै इति ॥ तहां इससंसारवृक्षका मूलतौं ब्रह्महै ॥ और हिरण्यगर्भादिकजीव इससंसारवृक्षकी शाखारूपहैं ॥ ऐसायहसंसारवृक्ष आपणेस्वरूपकरिकैतौं विनाशवान्हींहै ॥ और प्रवाहरूपकरिकैतौं यहसंसारवृक्ष अनंतहै ॥ ऐसायहसंसारवृक्ष वेदउक्तकर्मरूपजलकरिकैतौं सिंचनकऱ्याजावैहै और ब्रह्मज्ञानरूपखड्गकरिकै छेदनकऱ्याजावैहै ॥ इतनाहीं सर्ववेदोंकाअर्थहै ॥ इसप्रकारकेवेदकेअर्थकूं जोअधिकारीपुरुष जानताहै ॥ सोअधिकारीपुरुषहीं सर्वअर्थोंकूंजानताहै ॥ इसप्रकारतैं तिस मूलसहित संसारवृक्षकेज्ञानकी श्रीभगवान् स्तुतिकरेहै (यस्तंवेद स वेदवित्इति) ॥ १ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् तिसपूर्वउक्तसंसारवृक्षके अवयवोंकी दूसरीभीकल्पना कथनकरेहै ॥

(मू०श्लो०)अधश्चोर्ध्वंप्रसृतास्तस्यशाखागुणप्रवृद्धाविषयप्रवालाः ॥ अधश्चमूलान्यनुसंततानिकर्मानुबंधीनिमनुष्यलोके ॥२॥ अधः । च । ऊर्ध्वं । प्रसृताः । तस्य । शाखाः । गुणप्रवृद्धाः । विषयप्रवालाः । अधः । च । मूलानि । अनुसंततानि । कर्मानुबंधीनि । मनुष्यलोके ॥ २ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिससंसारवृक्षकी शाखा नीचै तथा ऊपरि पसरीहुईहैं जेशाखा सत्वादिकगुणोंकरिकैवंधीहुईहैं तथाशब्दादिकविषयरूपपल्लवोंवालीहैं तथातिससंसारवृक्षके वासनारूपमूल नीचै तथाऊपरि अनुस्यूतहैं जेमूल अधिकारीमनुष्यदेहाविषे पुण्यपापरूपकर्मकेजनकहै ॥ २ ॥ इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे कार्यरूपउपाधिवाले हिरण्यगर्भादिकजीव इससंसारवृक्षकी शाखारूपकरिकेकथनकऱ्येथे ॥ अब तिनशाखावोंविषेभी जाविशेषता स्थितहै ॥ तिसविशेषताकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै (अधश्चोर्ध्वंइति) हेअर्जुन तिनशाखारूपजीवोंविषेभी जेनिषिद्धआचरणवाले दुष्कृती जीव हैं ॥ तेदुष्कृतीजीवतौं इससंसारवृक्षकी नीचैपसरीहुईशाखाहै ॥ अर्थात् तेपापीजीव पश्वादिकनीचयोंनियोंविषेविस्तारकूंप्राप्तहुई शाखाहैं ॥ और शास्त्रविहित आचरणवालेजेसुकृतीजीवहैं ॥ तेधर्मात्माजीवतौं इससंसारवृक्षकी ऊपरिपसरीहुई शाखाहैं ॥ अर्थात् तेधर्मात्मापुरुष देवादिकयोनियोंविषेविस्तारकूंप्राप्तहुई

शाखाहैं ॥ इसप्रकार मनुष्यलोकतैंआदिलैके पशु पक्षी वृक्ष नारकीयशरीरपर्यंत नीचैस्थानोंविषे तथातिसीमनुष्यलोकतैंलैके ब्रह्मलोकपर्यंत ऊपरिलेस्थानोंविषे तिससंसाररूपवृक्षकी जीवरूपशाखा विस्तारकूंप्राप्तहुईहैं ॥ कैसीहैंतेशाखा गुणोंकरिकैप्रवृद्धहुईहैं ॥ अर्थात् जैसे प्रसिद्धवृक्षकीशाखा जलकेसिंचनकरिकै स्थूल भावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे देह इंद्रिय विषय इत्यादिकआकारोंकरिकै परिणामकूंप्राप्तहुए जे सत्व रज तम यहतीनगुणहैं ॥ तिसतीनगुणरूपजलकरिकै तेजीवरूप शाखा स्थूलभावकूंप्राप्तहुईहैं ॥ पुनःकैसीहैंतेशाखा विषयरूपपल्लवोंवालीहैं ॥ अर्थात् जैसे लोकप्रसिद्धवृक्षकीशाखावोंकेअग्रभागकेसाथि कोमलअंकुररूप पल्लवोंका संबंधहोवैहै ॥ तैसे पूर्वउक्तजीवरूपशाखावोंके अग्रभागस्थानीय जेइंद्रियजन्यवृत्तियांहैं तिनवृत्तियोंकेसाथि तिनशब्दादिकविषयोंकासंबंधहै ॥ याकारणतैं तेशब्दादिकविषय तिनशाखावोंके कोमलपल्लवरूपहैं ॥ पुनःकैसाहैयहसंसाररूपवृक्ष ॥ जिससंसारवृक्षके अवांतरमूल नीचैतथाऊपरि अनुस्यूत होइकैरह्येहैं तहां तिसतिसपदार्थकेभोगकरिकैजन्य जे रागद्वेषादिकवासनाहैं ॥ जेवासना इसपुरुषकी धर्मअधर्मविषेप्रवृत्तिकरावैहैं ॥ तेरागद्वेषादिकवासनाहीं इससंसारवृक्षके अवांतरमूलहैं ॥ और पूर्वश्लोकविषे इससंसारवृक्षका जो मायाविशिष्टब्रह्मरूपमूल कथनकऱ्याथा ॥ सोमुख्यमूल कथनकऱ्याथा ॥ और अबी वासनारूपअवांतरमूलकथनकऱ्येहैं ॥ यातैं ईहां पुनरुक्तिदोषकीप्राप्तिहोवैनहीं इति ॥ कैसेहैंतेवासनारूपअवांतरमूल कर्मानुबंधीहैं ॥ तहां धर्मअधर्मरूपकर्महैं पश्चात्भावी जिनोंके तिनोंकानाम कर्मानुबंधीहै ॥ अर्थात् तेरागद्वेषादिकवासनारूपअवांतरमूल प्रथमं आपउत्पन्नहोइकै पश्चात् ताधर्मअधर्मरूपकर्मकूं उत्पन्न करेहैं ॥ तहां तेवासनारूपमूल किसस्थानविषे तिसधर्मअधर्मरूपकर्मकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तास्थानका कथनकरेहै (मनुष्य लोकेइति) तहां मनुष्यहोवै सोईहीं लोकहोवै ताकानाम मनुष्यलोकहै ॥ अर्थात् अधिकारीब्राह्मणादिकदेहोंकानाम मनुष्यलोकहै ॥ ऐसे अधिकारीब्राह्मणा दिकशरीरोंविषेहीं तेवासनारूपमूल बाहुल्यताकरिकै तिसधर्मअधर्मरूपकर्मकूं उत्पन्नकरेहैं ॥ जिसकारणतैं शास्त्रविषे मनुष्यकूंहीं कर्मकाअधिकार कथनकऱ्याहै इति ॥ २ ॥ ❀ ॥ अब श्रीभगवान् इसपूर्वउक्तसंसारविषे अनिर्वचनीयता कथनकरिकै ताकेछेदनकेउपायकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नरूपमस्येहतथोपलभ्यतेनांतोनचादिर्नचसंप्रतिष्ठा ॥ अश्वत्थमेनंसुविरूढमूलमसंगशस्त्रेणदृढेनछित्त्वा ॥ ३ ॥ नं । रूपम् । अस्य । इह । तथा । उपलभ्यते । न । अंतः । न । च । आदिः । न । च । संप्रतिष्ठा । अश्वत्थम् । एनम् । सुविरूढ मूलम् । असंगशस्त्रेण । दृढेन । छित्त्वा ॥ ३ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इससंसारविषेस्थितप्राणीयोंनें इससंसारवृक्षका तिस प्रकारका रूप नहीं जानीताहै तथाअंतभी नहीं जानीताहै तथा आदिभी नहीं जानीताहै तथा मध्यभी नहीं जानीताहै ऐसेदृढमू

ळवाले ईस अँश्वत्थरूपसंसारवृक्षकूं अँत्यंतदृढ वैराग्यरूपशस्त्रकरिकै छेदनकरिकै ब्रह्म जाणणेयोग्यहै ॥ ३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्ववर्णनकऱ्याजो यहसंसाररूपवृक्षहै सोकैसाहै ॥ इससंसारविषे स्थितप्राणीयोंनें इससंसारवृक्षका जिसप्रकारका ऊर्ध्वमूल अधःशाखा इत्यादिकरूप पूर्ववर्णनकऱ्याहै तिसप्रकारकारूप नहींजानीताहै ॥ काहेतैं जैसे स्वप्नकेपदार्थ तथामृगतृष्णाकाजल तथामायारचितपदार्थ तथागंधर्वनगर यहसर्व मिथ्याहोणेतैं दृष्टनष्टस्वरूपवालेहींहैं॥ तैसे यहसंसारवृक्षभी मिथ्याहोणेतैं दृष्टनष्टस्वरूपवालाहींहै ॥ तहां जोपदार्थ देखतेदेखते नष्टहोइजावैहै ताकानाम दृष्टनष्टहै॥ ऐसेदृष्टनष्टस्वभाववाले इससंसारवृक्षका सोपूर्वउक्त ऊर्ध्वमूल अधःशाखा इत्यादिकरूप इनजीवोंकूं देखणेविषेआवतानहीं ॥ इसीकारणतैंहीं इससंसार वृक्षका अवसानरूपअंतभी नहींप्रतीतहोवैहै ॥ अर्थात् इतनेंकालकेवितीतहुएतैंपश्चात् यहसंसारवृक्ष समाप्तिकूंप्राप्तहोवैगा इसप्रकारतैं इससंसारवृक्षका अंतभी जान्याजातानहीं ॥ जिसकारणतैं यहसंसारवृक्ष परिअवसानरूपअंततैंरहितहै ॥ तथा इससंसारवृक्षका आदिभी नहींप्रतीतहोवैहै ॥ अर्थात् इसकाल तैंलैके यहसंसारवृक्ष प्रवृत्तहुआहै याप्रकारतैं इससंसारवृक्षकाआदिभी जान्याजातानहीं ॥ जिसकारणतैं यहसंसारवृक्ष अनादिहै ॥ तथा इससंसारवृक्षकी स्थिति रूपप्रतिष्ठाभी प्रतीतहोतीनहीं ॥ अर्थात् मध्यभी प्रतीतहोतानहीं ॥ काहेतैं आदि अंत दोनोंकीअपेक्षाकरिकैहीं मध्य कह्याजावैहै ॥ ताआदिअंतकेअसिद्धहुए सोमध्यभी सिद्धहोवैनहीं ॥ इसप्रकारका यहसंसारवृक्ष जिसकारणतैं दुश्छेद्यहै तथासर्वअनर्थोंकेकरणेहाराहै ॥ तिसकारणतैं अनादिअज्ञानकरिकै अत्यंतदृढ बांध्याहैमूलजिसका ऐसे इसपूर्वउक्त अश्वत्थरूपसंसारवृक्षकूं दृढअसंगशस्त्रकरिकै यहअधिकारीपुरुष छेदनकरै ॥ ईहां विषयसुखकीस्पृहाकानाम संगहै ॥ तासंग काविरोधीजोवैराग्यहै ताकानाम असंगहै ॥ अर्थात् पुत्रएषणा वित्तएषणा लोकएषणा इनतीनएषणावोंका त्यागरूपजोवैराग्यहै ताकानाम असंगहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्ध कुठारादिकशस्त्र लोकप्रसिद्ध वृक्षकेविरोधीहोवैहैं ॥ तैसे यहवैराग्यभी इस रागद्वेषादिरूपसंसारवृक्षका विरोधीहै ॥ यातैं यहवैराग्यभी शस्त्ररूपहै ॥ कैसाहैयह वैराग्यरूप असंगशस्त्र दृढहै ॥ अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारकेब्रह्मज्ञानकीउत्कटइच्छाकरिकै दृढकऱ्याहै ॥ और जैसे लोकप्रसिद्धशस्त्र पाषाण विशेषकेघर्षणतैं तीक्ष्णहोवैहै ॥ तैसे जोवैराग्यरूपअसंगशस्त्र पुनःपुनः विवेकअभ्यासकरिकै तीक्ष्णहुआहै ॥ ऐसे दृढअसंगशस्त्रकरिकै यहअधिकारीपुरुष तिनपूर्वउक्तसंसारवृक्ष मूलसहितउच्छेदनकरै ॥ अर्थात् वैराग्य शम दम इत्यादिकसाधनसंपत्तिकरिकै सर्वकर्मोंकेसंन्यासकूंकरै ॥ यहहीं तिससंसारवृक्ष काछेदनहै इति ॥ ३ ॥ ❁ ॥ शंका ॥ हेभगवन् ऐसेसंसाररूपअश्वत्थवृक्षकूं असंगशस्त्रसैं छेदनकरिकै इसअधिकारीपुरुषकूं तिसतैंअनंतरभी कछुक र्त्तव्यहै अथवा इतनेंमात्रकरिकैहीं कृतकृत्यताहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तिसतैंअनंतर कर्त्तव्यताकूंकथनकरैहै ॥

(मू०श्लो०) ततःपदंतत्परिमार्गितव्यंयस्मिन्गताननिवर्ततिभूयः ॥ तमेवचाद्यंपुरुषंप्रपद्येयतःप्रवृत्तिःप्रसृतापुराणी ॥ ४ ॥
ततः । पदम् । तत् । परिमार्गितव्यम् । यस्मिन् । गताः । न । निवर्त्तंति । भूयः । तम् । एव । च । आद्यम् । पुरुषम् । प्रपद्ये । यतः । प्रवृत्तिः । प्रसृता पुराणी ॥ ४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन तिसतैंअनंतर सोब्रह्मरूप पदहीं जानणेयोग्य है जिसपदविषे स्थितहुए विद्वान्पुरुष पुनः नहीं जन्म कूं प्राप्तहोवैहैं तथा जिसपुरुषतैं इससंसारवृक्षकीप्रवृत्ति अनादि पसरीहुईहै तिसैं आद्य पुरुषकेहीं मैंशरणकूंप्राप्तहुआहूं ॥ ४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहअधिकारीपुरुष तिसवैराग्यरूपअसंगशस्त्रकरिकै पूर्वउक्तसंसाररूपवृक्षकूं मूलसहित उच्छेदनकरिकै तिसतैंअनंतर श्रोत्रियब्रह्मनिष्ठगुरुके समीपजाइकै तिससंसाररूपअश्वत्थवृक्षतैंऊर्ध्वस्थितजोशुद्धब्रह्मरूपवैष्णवपदहै जोपद (तद्विष्णोःपरमंपदम्) इत्यादिकश्रुतियोंनैं प्रतिपादनकऱ्याहै सोशुद्धब्रह्मरूप पदहीं इसअधिकारीपुरुषनैं श्रवणमननरूप वेदांतवाक्योंकेविचारकरिकै जानणेकूंयोग्यहै ॥ तहांश्रुति (सोऽन्वेष्टव्यःसविजिज्ञासितव्यः) अर्थयह ॥ सोपरब्रह्महीं इसअधिकारीपुरुषकूं अन्वेषणकरणेकूंयोग्यहै ॥ तथा सोब्रह्महीं इसअधिकारीपुरुषकूं जानणेकीइच्छाकरणेयोग्यहै ॥ इति ॥ तहां मार्गकरिकै जो वस्तुका खोजणाहैं ताकानाम अन्वेषणहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् ॥ सर्व कर्मोंकेसंन्यासपूर्वक श्रवणादिकसाधनोंकरिकै इसअधिकारीपुरुषनैं जोपद जानणेयोग्यहै सोपद कौंनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहूए श्रीभगवान् कहेहै (यस्मिन्गताननिवर्त्ततिभूयःइति) हेअर्जुन जिसपदविषे अहंब्रह्मास्मि याप्रकारकेज्ञानकरिकै प्राप्तहुए तत्त्ववेत्तापुरुष पुनः संसारकीप्राप्तिवासतै नहींआवैहैं ॥ अर्थात् पुनःजन्मकूंनहींप्राप्तहोवैहैं ॥ सोअद्वितीयब्रह्मरूपपदहीं इसअधिकारीपुरुषनैं श्रवणादिकसाधनोंकरिकै जानणेयोग्यहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोनिर्गुणब्रह्मरूपपद किसउपायकरिकै जान्याजावैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् तापदकेजानणे काउपाय कथनकरेहै (तमेवचाद्यंपुरुषंप्रपद्येइति) हेअर्जुन पूर्व जोअद्वितीयनिर्गुणब्रह्म पदशब्दकरिकैकथनकऱ्याहै तिसीहीं परब्रह्मरूपआद्यपुरुषके मैंअधिकारीजन शरणकूंप्राप्तहुआहूं इसप्रकारतैं जो तिसएकपरब्रह्मकीशरणताहै ताशरणाताकरिकैहीं सोपरब्रह्मरूपपद जान्याजावैहै ॥ तहां सर्वजगत्केआदिविषे जोविद्यमान होवै ताकानाम आद्यहै ॥ और यहसर्वजगत् जिसनैं आपणे अस्तिभातिप्रियरूपकरिकै पूर्णकऱ्याहै ताकानाम पुरुषहै ॥ अथवा इनशरीररूपसर्वपुरियोंविषे जो अधिष्ठानरूपकरिकैशयनकरेहै ताकानाम पुरुषहै ॥ ऐसेआद्यपुरुषरूपपरब्रह्मका जोनिरंतरचिंतनरूप अनन्यभक्तिहै साअनन्यभक्तिहींतिसपरब्रह्मरूपपदकेसाक्षात्कारकाउपायहै इति ॥ शंका ॥ हेभगवन् सोकौंनपुरुषहै जिसकेशरणकूंप्राप्तहुआ यहअधिकारीपुरुष तिसवैष्णवपदकूं जानताहै ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाके

हुए श्रीभगवान् कहेहै (यतःप्रवृत्तिःप्रसृतापुराणीइति) हेअर्जुन जिसआद्यपुरुषतैं मायाकेयोगकरिकै इसमायामयसंसारवृक्षकी यहअनादिप्रवृत्ति चलीहुई है ॥ जैसे ऐंद्रजालिकपुरुषतैं मायामय हस्तिआदिकोंकीप्रवृत्ति होवैहै ॥ तैसे जिसआद्यपुरुषतैं इसमायामयसंसारवृक्षकी प्रवृत्तिहुईहै ॥ ऐसेआद्यपुरुषकेशरण कीप्राप्तिहीं तिसपदकेजानणेकाउपायहै इति ॥ ४ ॥ ❀ ॥ अब तिसवैष्णवपदकेज्ञानपूर्वक तिसवैष्णपदकूंप्राप्तहोणेहारे अधिकारीपुरुषोंके तिसपदकीप्राप्ति वासतै दूसरेसाधनोंकूंभी श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) निर्मानमोहाजितसंगदोषाअध्यात्मनित्याविनिवृत्तकामाः ॥ द्वंद्वैर्विमुक्ताःसुखदुःखसंज्ञैर्गच्छंत्यमूढाःपदमव्ययंतत् ॥ ५ ॥ निर्मानमोहाः ॥ जितसंगदोषाः । अध्यात्मनित्याः । विनिवृत्तकामाः । द्वंद्वैः । विमुक्ताः । सुखदुःखसंज्ञैः । गच्छंति अमूढाः । पदं । अव्ययं । तत् ॥ ५ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मानमोहदोनोंनिवृत्तहुएहैंजिनोंतैं तथाजीत्याहैसंगदोषाजिनोंनैं तथापरमात्मस्वरूपकेविचारविषेतत्पर तथानिवृत्तहुएहैंकामाजिनोंके तथासुखदुःखनामवाले शीतउष्णादिकद्वंद्वोंनैं परित्यागकऱ्ये हुए ऐसेविद्वान्पुरुष तिसं अव्यय पदकूं प्राप्तहोवैहैं ॥ ५ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन गर्वहैनामजिसका ऐसाजो अहंकारहै ताअहंकारकानाम मानहै ॥ और अविवेककानाम मोहहै ॥ अथवा विपर्ययकानाम मोहहै ॥ तिस मान मोहदोनोंतैं जेपुरुष निकस्येहुएहैं तिनपुरुषोंकानाम निर्मानमोहाहै ॥ अथवा तेमानमोहदोनों निवृत्तहुएहैं जिनोंतैं तिनोंकानाम निर्मानमोहाहै अर्थात् अहंकार अविवेक दोनोंतैंरहित पुरुषोंकानाम निर्मानमोहाहै ॥ तथा जेपुरुष जितसंगदोषाहै अर्थात् प्रियअप्रियपदार्थोंकीसमीपताकेप्राप्तहुए भी जेपुरुष रागद्वेषतैं रहितहैं ॥ अथवा जीत्याहुआहै संग तथादोष जिनोंनैं तिनोंकानाम जितसंगदोषाहै ॥ ईहां संगशब्दकरिकैतौं मैंकर्त्ताहूं याप्रकारकेकर्तृत्वअभिमानकाग्रहण करणा ॥ और दोषशब्दकरिकै रागद्वेषादिकदोषोंकाग्रहणकरणा ॥ तथा जेपुरुष अध्यात्मनित्याहैं ॥ अर्थात् जेपुरुष परमात्मादेवकेवास्तवस्वरूपकेविचारविषे निरंतर तत्परहैं ॥ तथा जेपुरुष विनिवृत्तकामाहैं ॥ तहां विशेषकरिकैनिवृत्तहुएहैंविषयभोगरूपकाम जिनोंके तिनोंकानाम विनिवृत्तकामाहै ॥ अर्थात् जिनपुरुषोंनैं विवेकवैराग्यद्वारा सर्वकर्म त्यागकऱ्येहैं तिनोंकानाम विनिवृत्तकामाहै ॥ और सुखदुःखकाहेतुहोणेतैं सुखदुःखनामवाले ऐसेजे शीतउष्ण क्षुधापिपासा इत्यादिक द्वंद्वहैं ॥ ऐसे द्वंद्वोंनैं जेपुरुष परित्यागकऱ्येहैं ॥ और किसीमूलपुस्तकविषेतौं (सुखदुःखसंगैः) इसप्रकारकाभीपाठहोवैहै ॥ ताका यहअर्थकरणा ॥ सुखदुःखदोनोंकेसाथिहै संग क्या संबंध जिनोंका ऐसेजे शीतउष्णादिकद्वंद्वहैं तिनद्वंद्वोंनैं जेपुरुषपरित्यागकरेहैं ॥ इसप्रकारके अमूढपुरुष अर्थात्

वेदांतप्रमाणतैं उत्पन्नहुए सम्यक्आत्मज्ञानकरिकै निवृत्तकऱ्याहैआत्माकाअज्ञान जिनोंनैं ऐसेतत्त्ववेत्तापुरुषहीं तिसपूर्वउक्त अविनाशी परब्रह्मरूपपदकूं प्राप्तहोवैहैं इति ॥ ५ ॥ ❁ ॥ तहां इनपूर्वउक्तसाधनोंकरिकै प्राप्तहोणेयोग्य जो अद्वितीयनिर्गुणब्रह्मरूप वैष्णवपदहै ॥ तिसीहींगंतव्यपदकूं अब श्रीभगवान् विशेषणोंकरिकैकथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) नतद्भासयतेसूर्योनशशांकोनपावकः ॥ यद्गत्वाननिवर्त्ततेतद्धामपरमंमम ॥ ६ ॥ नं । तत् । भासयते । सूर्यः । नं । शशांकः । नं । पावकः । यत् । गत्वा । नं । निवर्त्तते । तत् । धाम । परमं । मम ॥ ६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिसपदकूं प्राप्तहोइकै तत्त्ववेत्तापुरुष नहीं आवृत्तिकूंप्राप्तहोवैहैं तिसपदकूं सूर्यभी नहीं प्रकाशकरिसकेहै तथा चंद्रमाभी नहीं प्रकाशकरि सकेहै तथाअग्निभी नहीं प्रकाशकरिसकेहै जिसकारणतैं मैंविष्णुका स्वरूपभूत सोपदसर्वतैंउत्कृष्टस्वयंप्रकाशस्वरूपहै ॥ ६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन पूर्वउक्तसाधनोंकरिकै जिस निर्गुणअद्वितीयब्रह्मरूप वैष्णवपदकूं प्राप्तहोइकै तत्त्ववेत्तापुरुष पुनः आवृत्तिकूंनहींप्राप्तहोवैहैं ॥ अर्थात् पुनः जन्मकूंनहींप्राप्तहोवैहैं ॥ तिसपरब्रह्मरूपपदकूं सर्वजगत्केप्रकाशकरणेकीशक्तिवाला सूर्यभी प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् सूर्यकेअस्तहुएभी चंद्रमाकृतप्रकाश देखणेविषेआवैहै ॥ यातैं सोचंद्रमाहीं तिसपदकूं प्रकाशकरैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (नशशांकइति) हेअर्जुन सोचंद्रमाभी तिसपदकूं प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् सूर्य चंद्रमा दोनोंकेअस्तहुएभी अग्निकृतप्रकाश देखणेमैंआवैहै ॥ यातैं सोअग्निहीं तिस पदकूं प्रकाशकरैगा ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (नपावकःइति) हेअर्जुन सोअग्निभी तिसपदकूं प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ शंका ॥ हेभगवन् सूर्य चंद्रमा अग्नि यहतीनों तिसपदकूं प्रकाशनहींकरिसकते इसप्रकारकीप्रतिज्ञामात्रतैं तिस अर्थकीसिद्धिहोइसकतीनहीं ॥ जोकदाचित् प्रतिज्ञामात्रतैंहीं अर्थ कीसिद्धिहोतीहोवै ॥ तौं वंध्यापुत्रोऽस्ति इसप्रतिज्ञामात्रकरिकै वंध्यापुत्रकीभी सिद्धिहोणीचाहिये ॥ और होतीनहीं ॥ यातैं तिसप्रतिज्ञाकऱ्येहुएअर्थकी सिद्धिविषे कोईहेतुकह्याचाहिये ॥ सोहेतुकौंनहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् ताकेविषे तिसपरब्रह्मकीस्वयंप्रकाशतारूपहेतुकूं कथनकरेहै (तद्धा मपरमंममइति) हेअर्जुन जिसकारणतैं मैंव्यापकविष्णुका स्वरूपभूत सोपद धामरूपहै ॥ अर्थात् स्वप्रकाशरूपहै ॥ तथा सूर्य चंद्रमा अग्नि इत्यादिकसर्व जडज्योतियोंकूं प्रकाशकरणेहाराहै ॥ तथा परमहै ॥ अर्थात् सर्वतैं उत्कृष्टहै ॥ तिसकारणतैं तेसूर्यचंद्रादिक तिसपदकूं प्रकाशकरिसकतेनहीं ॥ लोकविषेभी

जोवस्तु तिसज्योतिकरिकै भास्यमानहोवैहै ॥ सोभास्यवस्तु तिसस्वभासकज्योतिकूं प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ जैसे सूर्यरूपज्योतिकरिकैभास्यमान घटादिकपदार्थ स्वभासकसूर्यरूपज्योतिकूं प्रकाशकरिसकतेनहीं ॥ तैसे यहसूर्यचंद्रमादिकजडज्योतिभी स्वभासकचैतन्यपरब्रह्मरूपज्योतिकूं प्रकाशकरिसकतेनहीं ॥ इतनैंकहणे करिकै श्रीभगवान्नैं यहअनुमान सूचनकऱ्या ॥ सूर्य चंद्रमादिक परब्रह्मकेप्रकाशनहींहै तिसपरब्रह्मकरिकैभास्यमानहोणेतैं जोवस्तु जिसज्योतिकरिकैभास्यमान होवैहै ॥ सोभास्यवस्तु तिसस्वभासकज्योतिकूंप्रकाशकरतानहींहै ॥ जैसे घटादिकपदार्थ सूर्यकूं प्रकाशकरतेनहीं इति ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभीकथनकरीहै ॥ ॥ तहांश्रुति ॥ (नतत्रसूर्योभातिनचंद्रतारकंनेमाविद्युतोभांतिकुतोयमग्निः । तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभाति) ॥ अर्थयह ॥ तिसपरब्रह्मरूपपदकूं सूर्यभी नहींप्रकाशकरिसकता तथा चंद्रमा तारागणभी नहींप्रकाशकरिसकते तथा यहविद्युत्भी नहींप्रकाशकरिसकते॥ तौं यहअल्पप्रकाशवालाअग्नि तिसपरब्रह्मकूं कैसेप्रकाशकरिसकैंगा ॥ किंतु नहींप्रकाशकरिसकैंगा ॥ और तिसपरब्रह्मकेप्रकाशमानहुएतैंपश्चात्हीं यहसर्वजगत् प्रकाशमानहोवैहै ॥ तथा तिसपरब्रह्मकी प्रकाशरूपदीप्तिकरिकैहीं यहसर्वजगत् प्रतीतहोवैहै इति ॥ तहां तिसपरब्रह्मरूपपदकूं स्वप्रकाशरूपताकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं इसशंकाकीनिवृत्तिकरी ॥ सोपरब्रह्मरूप वैष्णवपद वेद्यहै अथवानहीं॥अर्थात् किसीकेज्ञानकाविषयहै अथवा नहीं॥जोकहो सोपद वेद्यहै॥तौं जोवस्तु वेद्यहोवैहै॥सोवस्तु आपणेतैंभिन्नवेदितृपुरुषकीअपेक्षा अवश्यकरेहै ॥ जैसे घटादिकवेद्यवस्तु आपणेतैंभिन्नवेदितृपुरुषकीअपेक्षा अवश्यकरेहैं ॥ तैसे सोवेद्यपदभी आपणेभिन्न किसीवेदितृपुरुषकीअपेक्षा अवश्य करैंगा ॥ यातैं तुमारेमतविषे द्वैतभावकीप्राप्तिहोवैंगी ॥ और सोपद अवेद्यहै यहदूसरापक्ष जोअंगीकारकरौ ॥ तौं तिसपदविषे अपुरुषार्थरूपता प्राप्तहोवैंगी ॥ जिससकारणतैं अवेद्यपदविषे पुरुषार्थरूपतासंभवतीनहीं इति ॥ इसशंकाकीनिवृत्तिकरी ॥ काहेतैं सोपदब्रह्मरूपपद अवेद्यहुआभी आपपरोक्षरूपहींहै ॥ तहां श्रुति ॥ (यत्साक्षादपरोक्षाद्ब्रह्म ॥) अर्थयह ॥ जोब्रह्म साक्षात्अपरोक्षरूपहै इति ॥ यातैं द्वैतभावकीप्राप्ति तथापुरुषार्थरूपताकीहानिहोवैनहीं ॥ तहां तिसपरब्रह्मरूपपदविषे अवेद्यरूपतातौं श्रीभगवान्नैं (नतद्भासयतेसूर्यो इसश्लोकविषे सूर्यादिकोंकरिकैअभास्यमानत्वरूपहेतुकरिकै कथनकरीहै ॥ और सर्व कीप्रकाशकताकरिकै स्वयंअपरोक्षपणातौं (यदादित्यगतंतेजः) इसवक्ष्यमाणश्लोकविषे श्रीभगवान् कथनकरैंगा ॥ इसप्रकार दोनोंश्लोकोंकरिकै श्रीभगवान्नैं (नतत्रसूर्योभाति) इसपूर्वउक्तश्रुतिके दोनोंविभागोंकाअर्थ कथनकऱ्या इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (नतद्भासयतेसूर्यो) इसश्लोकका यहअर्थ कथनकऱ्याहै ॥ तिसपरब्रह्मपदकूं सूर्यभीनहीं प्रकाशकहैहै ॥ काहेतैं सोपद रूपादिकगुणोंतैंरहितहोणेतैं चक्षुइंद्रियकाविषयहैनहीं ॥ जोरूपवान्वस्तु चक्षु इंद्रियकाहोवैहै ॥ सोरूपवान्वस्तुहीं तिसचक्षुऊपरिअनुग्रहकरणेहारेसूर्यनैं प्रकाशकरीताहै ॥ जैसे रूपवान्घटादिकपदार्थ चक्षुइंद्रियकाविषयहोणेतैं सूर्य

नैं प्रकाशकरीतेहैं ॥ और यहपरब्रह्मरूपपदतौं रूपवान् हुआ चक्षुइंद्रियकाविषयहैनहीं ॥ यातैं इसपदकूं सोसूर्यप्रकाशकरिसकतानहीं ॥ तहां (नतत्रचक्षुर्गच्छति नचक्षुषागृह्यते) इत्यादिकश्रुतियां तिसपरब्रह्मविषे चक्षुइंद्रियकीअविषयताकूं कथनकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं तिसपदविषे सर्वबाह्यइंद्रियोंकीनिवृत्ति कथनकरी ॥ अब तिसपदविषे मनकीव्यावृत्ति कथनकरेहैं (नशशांकःइति) हेअर्जुन तिसपदकूं चंद्रमाभी नहींप्रकाशकरिसकेहै ॥ काहेतैं जोवस्तु मनकरिकैग्रहणकऱ्याजावैहै ॥ तिसवस्तुकूंहीं सोमनऊपरिअनुग्रहकरणेहाराचंद्रमा प्रकाशकरेहै ॥ और यहपरब्रह्मरूपपदतौं तिसमनकरिकैग्रहण होतानहीं ॥ यातैं इसपरब्रह्मकूं सोचंद्रमाभी प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ तहां (यन्मनसानमनुते) इत्यादिक श्रुतियां तिसब्रह्मरूपपदविषे मनकीविषयताका निषेधकरेहैं ॥ और तिसपरब्रह्मरूपपदकूं अग्निभी प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ काहेतैं जोवस्तु वाक्इंद्रियकाविषयहोवैहै ॥ तिसवस्तुकूंहीं सोवाक्इंद्रियऊपरिअनुग्रहकरणेहारा अग्नि प्रकाशकरेहै ॥ तावाक्इंद्रियकेअविषयवस्तुकूं सोअग्नि प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ और (यद्वाचानभ्युदितम् । नचक्षुषागृह्यतेनापि वाचा) इत्यादिकश्रुतियोंनैं तिसपरब्रह्मविषे वाक्इंद्रियकीविषयताका निषेधकऱ्याहै ॥ यातैं तिसपरब्रह्मकूं सोअग्नि प्रकाशकरिसकतानहीं ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोपरब्रह्मरूपपद चक्षु मन वाक् इनतीनोंका अविषयहै तिसकारणतैं सोपरब्रह्मरूपपद स्थूलसूक्ष्मकारणरूपसर्वप्रपंचतैंरहित प्रत्यक्अद्वितीयरूपहै ॥ इसप्रकार (नांतःप्रज्ञंनबहिःप्रज्ञंअस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम्) इत्यादिकश्रुतियोंनैं सर्वधर्मोंतैंरहितकरिकै जो प्रत्यक्अभिन्नअद्वितीयब्रह्म प्रतिपादनकऱ्याहै ॥ सोअद्वितीयब्रह्म मैंपरमेश्वरका परमधामहै ॥ अर्थात् परमभावतैंरहित जोअंतःकरणकीवृत्तिरूपज्ञानहै तिसवृत्तिरूपज्ञानतैंअन्य चिन्मात्रज्योतिरूपहै ॥ ईहां राहोःशिरः इसवाक्यविषे राहुपदतैं उत्तरसंबंधकावाचकषष्ठीविभक्तीके विद्यमानहुएभी जैसे राहुकाशिरहै इसप्रकारकाबोधहोतानहीं ॥ किंतु राहुतैंअभिन्नशिरहै इसप्रकारका अभेदबोधहींहोवैहै ॥ तैसे (तद्धामपरमंमम) इसवचनविषेमम इसपदतैं उत्तरसंबंधकावाचक षष्ठीविभक्तिकेविद्यमानहुएभी मेरापरमधामहै याप्रकारकाबोधहोवैनहीं ॥ किंतु मैंपरमेश्वरतैंअभिन्न सोस्वप्रकाशब्रह्मरूपधामहै याप्रकारका अभेद बोधहींहोवैहै इति ॥ हेअर्जुन जिसकारणतैं सोअद्वितीयस्वयंज्योतिब्रह्मरूपपद मैंपरमेश्वरका स्वरूपहींहै ॥ इसकारणतैंहीं जिसपदकूं अहंब्रह्मास्मि इसज्ञानपूर्वक प्राप्तहोइकै विद्वान्पुरुष पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ अर्थात् पुनः जन्मकूंप्राप्तहोतेनहीं ॥ काहेतैं पुनः आवृत्तिकाकारणरूप जामूलअज्ञानहै ॥ सोमूलअज्ञान तिनपुरुषोंका मैंपरब्रह्मकेअभेदज्ञानतैं निवृत्तहोइगयाहै ॥ याकारणतैं तेतत्त्ववेत्तापुरुष पुनः आवृत्तिकूंप्राप्तहोतेनहीं इति ॥ इसकारणतैं इसश्लोककेव्याख्यानकीयेहुएहीं (यदाह्येवैषएतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभयंप्रतिष्ठांविंदते अथसोऽभयं गतोभवति ॥) इसश्रुतिकेअर्थकी तिसश्लोकविषे अनुकूलताहोवैहै ॥ इस

श्रुतिकायहअर्थहै ॥ जिसकालविषे यहअधिकारीपुरुष इसअदृश्य अनात्म्य अनिरुक्त अनिलयन ब्रह्मविषे भयतैंरहित स्थितिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे यह अधिकारीपुरुष पुनरावृत्तिकेभयतैंरहित ब्रह्मभावकूं प्राप्तहोवैहै इति ॥ इसश्रुतिविषे अदृश्य अनात्म्य अनिरुक्त अनिलयन यहच्यारिविशेषण ब्रह्मकेकथनकऱ्येहैं॥ तहां चक्षुकीदृष्टिका जो अविषयहोवै ताकानाम अदृश्यहै ॥ इसअदृश्यविशेषणकरिकै तिसब्रह्मविषे सूर्यकृतभास्यत्वका निषेधकऱ्या ॥ और मनरूप आत्माका जो विषयहोवैहै ताकानाम आत्म्यहै ॥ तिसतैंजोभिन्नहोवै ताकानाम अनात्म्यहै ॥ इसअनात्म्यविशेषणकरिकै तिसब्रह्मविषे मनकी अविषयता कथनकरिकै चंद्रमाकृतभास्यत्वका निषेधकऱ्या ॥ और स्थूलसूक्ष्मरूपसर्वजगत् लयकूंप्राप्तहोवैजिसविषे ताकानाम निलयनहै ॥ ऐसाअव्याकृत रूपकारणहै ॥ तिसकारणरूपनिलयनतैंजोभिन्नहोवै ताकानाम अनिलयनहै ॥ इसीकारणतैंहीं सोब्रह्म अनिरुक्तहै अर्थात् कथनकरणेकूंअयोग्यहै ॥ इसअनिरु क्तविशेषणकरिकै तिसपरब्रह्मविषे वाक्इंद्रियकीअविषयताकथनकरिकै अग्निकृतप्रकाशका निषेधकऱ्या इति ॥ और केईकभेदवादीतौ (नतद्भासयतेसूर्यो) इसश्लोकका यहअर्थ करेहैं ॥ सूर्य चंद्रमा अग्नि इनतीनोंकरिकैअप्रकाश्य तथाअर्चिरादिमार्गकरिकैप्राप्तहोणेयोग्य तथाब्रह्मलोकतैंभीऊपरिस्थित तथाअप्राकृत तथानित्य ऐसा वैष्णवपद देशांतरविषेस्थितहै ॥ तिसवैष्णवपदकूं अर्चिरादिमार्गद्वारा प्राप्तहोइकै यहअधिकारीजन पुनः आवृत्तिकूंनहींप्राप्तहोवैहैं इति ॥ सोयह तिनभेदवादियोंका अर्थ अत्यंतविरुद्धहै ॥ काहेतैं (नरूपमस्येहतथोपलभ्यते) इसश्लोकविषे सर्वदृश्यपदार्थोंकूं मिथ्यारूपहीं कथनकऱ्याहै ॥ और (अतोऽन्यदार्तम्) अर्थयह॥इसपरमात्मादेवतैंभिन्न सर्वअनात्मपदार्थ मिथ्याहैं ॥ इसश्रुतिनैंभी परमात्मादेवतैंभिन्न सर्वदृश्यपदार्थोंकूं मिथ्याकह्याहै ॥ सोदृश्यपणा जैसे इनलोकोंविषैहै ॥ तैसे तिसवैष्णवलोकविषेभी सोदृश्यपणा तुल्यहींहै ॥ यातैं देशांतरविषेस्थित तिसवैष्णवलोकविषेभी सोमिथ्यापणा अवश्यकरिकैहोवैं गा ॥ ऐसेमिथ्यालोकविषेप्राप्तहुएपुरुषोंकी पुनरावृत्तिभी अवश्यकरिकैहोवैगी ॥ यातैं यहभेदवादीयोंकाव्याख्यान समीचीननहींहै ॥ किंतु पूर्वउक्तव्याख्यानहीं समीचीनहै इति ॥ ६ ॥ ❀ ॥ शंका ॥ हेभगवन् (यद्गत्वाननिवर्तते) यहआपकावचन असंगतहै ॥ काहेतैं यहअधिकारीपुरुष जोकदाचित् तिसपदविषे जावैंगे ॥ तौं तिसपदतैं अवश्यकरिकै निवृत्तभीहोवैंगे ॥ जैसे स्वर्गविषेगएहुएकर्मीपुरुष तास्वर्गतैं अवश्यकरिकै पीछैआवैहैं ॥ और यहअधिकारीपुरुष जोकदा चित् तिसपदतैं पीछैनहींआवैंगे ॥ तौं तिसपदविषे जावैंगेभीनहीं ॥ यातैं यहअधिकारीपुरुष तिसपदविषे जातेहैं ॥ और तिसपदतैं पुनः आवतेनहीं यहदोनोंवचन परस्पर विरुद्धहैं ॥ और जो जहांजाताहै सो तहांतैं अवश्य फिरआवताहै यहवार्त्ता शास्त्रविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्लोक ॥ (सर्वेक्षयांतानिचयाःपतनांताःसमु च्छ्रयाः ॥ संयोगाविप्रयोगांतामरणांतंहिजीवितम् ॥) अर्थयह॥ जेपदार्थवृद्धिवालेहैं ॥ तेपदार्थ अंतविषे अवश्य क्षयवालेहोवैहैं ॥ और जेपदार्थ उच्चैस्थानविषे

प्राप्तहुएहैं ॥ तेपदार्थ अंतविषे अवश्य नीचैपतनहोवैहैं ॥ और जेपदार्थसंयोगवालेहुएहैं ॥ तेपदार्थ अंतविषे अवश्य वियोगवालेहोवैहैं ॥ और जिसपदार्थका जन्म हुआहै ॥ सोपदार्थ अंतविषे अवश्य मरणकूंप्राप्तहोवैहै इति ॥ और जोआप यहवचनकहो ॥ अनात्मवस्तुकीप्राप्तिहीं अंतविषे पुनरावृत्तिवालीहोवैहै ॥ आत्माकी प्राप्ति अंतविषे पुनरावृत्तिवालीहोवैनहीं ॥ सोयहआपकाकहणाभी संभवतानहीं ॥ काहेतैं (सतासोम्यतदासंपन्नोभवति) इसश्रुतिनैं सुषुप्तिअवस्थाविषे सर्वप्राणी मात्रकूं आत्मभावकीप्राप्ति कथनकरीहै ॥ परंतुसाआत्मभावकीप्राप्ति अंतविषे पुनरावृत्तिवालीहींहै ॥ जोकदाचित् सुषुप्तिविषे आत्मभावकूंप्राप्तहुएप्राणीयोंकी जाग्रतविषे पुनरावृत्ति नहीं अंगीकारकरीये ॥ तौं तिससुषुप्तिमात्रकरिकैहीं सर्वप्राणी मुक्तहोवैंगे ॥ यातैं मुक्तहुएतिनसुषुप्तपुरुषोंका पुनःउत्थान नहींहोणाचाहिये ॥ और तिनसुषुप्तपुरुषोंकी पुनरावृत्तितौं देखणेविषे आवैहै ॥ यातैं तिसपरब्रह्मरूपपदकीप्राप्तिविषे (यद्गत्वा) यहवचनकहणा संभवतानहीं ॥ और तिसगमनकूं जोगौणमानिये ॥ तौंभी तिसपदतैं अनिवृत्ति नहींसंभवैहै ॥ इसप्रकारकी अर्जुनकीशंकाकेहुए ॥ श्रीभगवान् उत्तरकहेहै ॥ हेअर्जुन तिसब्रह्मरूपपदकूं प्राप्तहोणे हारा जोजीवात्माहै ॥ सोजीवात्मा तिसगंतव्यब्रह्मतैं कोईभिन्ननहींहैं ॥ किंतुयहजीवात्मा तिसगंतव्यब्रह्मतैंअभिन्नहींहै ॥ और यहजीवात्मा ब्रह्मरूपहींहै इसअर्थकूं (तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि प्रज्ञानमानंदंब्रह्म अयमात्माब्रह्म) इत्यादिकअनेकश्रुतियां कथनकरेहैं ॥ यातैं (यद्गत्वाननिवर्त्तंते) इसवचनकरिकै कथनकरीजा जीवा त्माकूं ब्रह्मकीप्राप्तिहै ॥ साप्राप्ति स्वर्गादिकोंकेप्राप्तिकीन्यांई मुख्यनहींहैं ॥ किंतु साप्राप्तिगौणहै ॥ अर्थात् अज्ञानमात्रकरिकैव्यवहितजोब्रह्महै ॥ तिसब्रह्मकी अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारकाज्ञानमात्रहीं प्राप्तिकहीजावैहै ॥ तहां जिसपक्षमैं अंतःकरणविषे अथवा अविद्याविषे जो ब्रह्मकाप्रतिबिंबहै सोप्रतिबिंबहीं जीवहै ॥ तिसपक्षविषेतौं जैसे जलविषेप्रतिबिंबितसूर्यका ताजलकेअभावहुए बिंबभूतसूर्यकेप्रति गमनहोवैहै ॥ तथा तिसबिंबभूतसूर्यतैं तिसप्रतिबिंबकी पुनःआवृत्तिहोतीनहीं ॥ तैसे अंतःकरणादिकउपाधियोंकेअभावहुए इसप्रतिबिंबरूपजीवकाभी तिसनिरुपाधिकबिंबरूपब्रह्मकेप्रति गमनहोवैहै ॥ तथा तिस ब्रह्मतैं इसजीवात्माकी पुनःआवृत्तिहोतीनहीं ॥ और जिसपक्षमें बुद्धिअवच्छिन्नजोब्रह्मकाभागहै ताकानाम जीवहै ॥ तिसपक्षविषेतौं जैसे घटाकाशका घटरूपउपाधिके निवृत्तहुए महाकाशकेप्रति गमनहोवैहै ॥ तथा तिसमहाकाशतैं ताघटाकाशकी पुनः आवृत्तिहोतीनहीं ॥ तैसे इसजीवात्मा काभी तिसबुद्धिरूपउपाधिकेनिवृत्तहुए तिसब्रह्मकेप्रति गमनहोवैहै॥ तथा तिसब्रह्मतैं इसजीवात्माकी पुनःआवृत्तिहोतीनहीं॥ ईहां जैसे वास्तवतैं बिंबरूपसूर्यतैंअभिन्न प्रतिबिंबरूपसूर्यका तिसबिंबरूपसूर्यकेप्रतिगमन तथातिसतैं अनावृत्ति यहदोनों गौणहैं मुख्यनहींहैं ॥ और जैसे वास्तवतैं महाकाशतैं अभिन्नघटाकाश का तिसमहाकाशकेप्रति गमन तथातिसतैंअनावृत्ति यहदोनों गौणहैं मुख्यनहीं हैं तैसे वास्तवतैंब्रह्मतैंअभिन्नइसजीवात्माका जो तिसब्रह्मकेप्रति गमनहैं

तथातिसब्रह्मतैंअनावृत्तिहै यहदोनोंभी गौणहैं मुख्यनहींहैं ॥ आपणेतैं भिन्नवस्तुकेप्रति जोगमनहै तथातिसतैंआवृत्तिहै सोगमन तथाअनावृत्ति दोनोंहीं मुख्य कह्येजावैंहैं ॥ इसप्रकारवास्तवतैं जीवब्रह्मकेअभेदहुएभी जो तिनोंकाभेदभ्रमहोवैहै ॥ सोभेदभ्रम केवल अंतःकरणादिकउपाधिकेवशतैंहींहोवैहै ॥ जैसे घटरूपउ पाधिकेवशतैं घटाकाशका महाकाशतैंभेदभ्रमहोवैहै ॥ ताअंतःकरणादिकउपाधिकेनिवृत्तहुए सोभेदभ्रमभी निवृत्तहोइजावैहै इति ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषेतौं जीवकाउपाधिभूत सो संस्कारकर्मादिविशिष्ट अंतःकरण आपणेकारणरूपअज्ञानविषे सूक्ष्मरूपकरिकैस्थितहोवैहै ॥ यातैं तिसअज्ञानरूपकारणतैंहीं तिसअंतः करणका पुनरुद्भवहोवैहै ॥ और आत्मज्ञानकरिकै जबी अज्ञानकीनिवृत्तिहोवैहै ॥ तबी अज्ञानरूपकारणकेअभावहुए अंतःकरणादिककार्योंकीउत्पत्ति कहांतैं होवैंगी किंतु नहींउत्पत्तिहोवैंगी ॥ यातैं यह अर्थसिद्धभया ॥ इसजीवके अहंब्रह्मास्मि इसप्रकारके वेदांतवाक्यजन्यसाक्षात्कारतैं मैंब्रह्मनहीहूं इसप्रकारके अज्ञानकीजानिवृत्तिहै ॥ साअज्ञानकीनिवृत्तिहीं ॥ श्रीभगवान्नैं (यद्गत्वा) इसवचनकरिकै कथनकरीहै ॥ और आत्मसाक्षात्कारकरिकै निवृत्तहुआजो अनादि अज्ञानहै ॥ तिसअज्ञानके पुनःउत्थानकेअभावतैं जो तिसअज्ञानकेकार्यरूपसंसारकाअभावहै ॥ सोसंसारकाअभावहीं श्रीभगवान्नैं (ननिवर्त्तते) इसवच नकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ यातैं श्रीभगवान्केवचनोंविषे किंचित्मात्रभी विरोधकीप्राप्तिहोवैनहीं ॥ और इसजीवका पारमार्थिकस्वरूप ब्रह्महींहै यहवार्त्ता पूर्वअने कवार कथनकरिआयेहैं ॥ यहपूर्वउक्तसर्वअर्थ श्रीभगवान्नैं इसतैंउत्तरग्रंथकरिकै प्रतिपादनकरियैंगा ॥ तहां यहजीवात्मा वास्तवतैंब्रह्मरूपहींहै ॥ यातैं ब्रह्मसाक्षात्कारकरिकै अज्ञानकेनिवृत्तहुए तिसब्रह्मरूपताकूंप्राप्तहुएजीवकी तिसब्रह्मरूपतातैं पुनःआवृत्तिहोतीनहीं ॥ इस अर्थकूं श्रीभगवान् (ममैवांशोजीवलोके जीवभूतःसनातनः ॥) इसअर्द्धश्लोकरिकै कथनकरैगा ॥ और सुषुप्तिअवस्थाविषेतौं सर्वकार्योंकेसंस्कारसहितअज्ञान विद्यमानहै ॥ याकारणतैंहीं इसजीवात्माकूं तिससुषुप्तितैं पुनः संसारकीप्राप्तिहोवैहै ॥ इसअर्थकूं श्रीभगवान् (मनःषष्ठानींद्रियाणीप्रकृतिस्थानिकर्षति ॥) इसअर्द्धश्लोककरिकै कथनकरैंगा ॥ तिसतैंअनंतर वास्तवतैंअसंसारीरूपहुआभी मायाकरिकैसंसारीभावकूंप्राप्तहुआ तथामंदमतिपुरुषोंनैं देहकेसाथि तादात्म्यभावकूंप्राप्तकऱ्याहुआ ऐसाजो यहजीवात्माहै ॥ तिसजीवात्माका तिसदेहतैंव्यतिरेकपणेकूं श्रीभगवान् (शरीरंयदवाप्नोति) इसश्लोककरिकैकथनकरैंगा ॥ और शब्दादिकविषयोंविषे श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं प्रवृत्तकरणेहारा जोयहजीवात्माहै ॥ तिसजीवात्माका तिनश्रोत्रादिकइंद्रियोंतैंव्यतिरेकपणेकूं श्रीभगवान् (श्रोत्रंचक्षुःस्पर्शनंच) इसश्लोककरिकैकथनकरैंगा ॥ तहां इसप्रकार देहइंद्रियादिकोंतैंविलक्षणआत्माकूं उत्क्रांतिआदिकअवस्थावोंविषे सर्वप्राणी किसवास्तैनहींदेखतेहैं ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए ॥ विषयवासनाकरिकैवि क्षिप्तचित्तवालेपुरुष दर्शनयोग्यभी तिसआत्मादेवकूं नहींदेखिसकेहैं ॥ इसप्रकारके उत्तरकूं श्रीभगवान् (उत्क्रामंतंस्थितंवापि) इसश्लोककरिकै कथनकरैंगा ॥

तहां (उत्क्रामंतम्) इसश्लोकविषे स्थितजो (पश्यंतिज्ञानचक्षुषः) यहवचनहै ॥ इसवचनकेअर्थकूं श्रीभगवान् (यतंतोयोगिनश्चैनपश्यंत्यात्मन्यवस्थितम्) इसअर्द्धश्लोककरिकै वर्णनकरैंगा ॥ और (विमूढानानुपश्यंति) इसवचनकेअर्थकूंतौं (यतंतोप्यकृतात्मानोनैनंपश्यंत्यचेतसः) इसअर्धश्लोककरिकै वर्णनकरैंगा ॥ इसप्रकारतैं इनवक्ष्यमाणपंचश्लोकोंकी परस्परसंबंधरूपसंगति सिद्धहोवैहै ॥ अबीआगे इनपंचश्लोकोंके केवल अक्षरोंकेअर्थकूं वर्णनकरैंगे इति ॥

(मू० श्लो०) ममैवांशोजीवलोकेजीवभूतःसनातनः ॥ मनःषष्ठानींद्रियाणिप्रकृतिस्थानिकर्षति ॥ ७ ॥ मम । एव । अंशः । जीवलोके । जीवभूतः । सनातनः । मनःषष्ठानि । इंद्रियाणि । प्रकृतिस्थानि । कर्षति ॥ ७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन इससंसारविषे मैंपरमात्माका हीं अंश सनातन जीवरूपहै सोजीव मनहैषष्ठा जिनोंविषे ऐसेप्रकृतिविषेस्थित श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आकर्षणकरेहै ॥ ७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वास्तवतैं अंशअंशीभावतैंरहित जो मैंपरमात्मादेवहूं ॥ तिसमैंपरमात्मादेवकाहीं मायाकरिकैकल्पित अंशकीन्यांईअंशरूप इससंसारविषे विद्यमानहै ॥ अर्थात् जैसे वास्तवतैं अंशअंशीभावतैंरहितसूर्यका जलविषेस्थित मिथ्याभेदवाला अंशकीन्यांईअंशरूप प्रतिबिंब होवैहै ॥ तथा जैसे वास्तवतैं अंशअंशीभावतैंरहितमहाकाशका घटविषेस्थित मिथ्याभेदवाला अंशकीन्यांईअंशरूप घटाकाश होवैहै ॥ तैसे वास्तवतैंअंशअंशीभावतैंरहित मैंपरमात्मादेवकाभी इससंसारविषे मिथ्याभेदवालाअंशकीन्यांईअंश विद्यमानहै ॥ सो मैंपरमात्मादेवकाअंश प्राणोंकाधारणरूपउपाधिकरिकै जीवभूतहुआहै ॥ अर्थात् कर्त्ताभोक्ता संसारी इसप्रकारकी मिथ्याहीं प्रसिद्धिकूं प्राप्तहुआहै ॥ कैसाहैसोजीवरूपअंश सनातनहै क्या नित्यहै ॥ अर्थात् अंतःकरणादिकउपाधिकृतपरिच्छिन्नताकेहुएभी वास्तवतैं सोजीवात्मा परमात्मास्वरूपहींहै ॥ काहेतैं श्रुतिविषे तिसपरमात्मादेवकाहीं इसशरीरविषे जीवरूपकरिकै प्रवेश कथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सएषइहप्रविष्टआनखाग्रेभ्यः । तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविशत् ॥) अर्थयह ॥ सोपरमात्मादेवहीं इससंघातविषे नखकेअग्रभागतैंलेके प्रवेशकरताभया ॥ और सोपरमात्मादेव इससंघातकूंउत्पन्नकरिकै आपहीं जीवरूपहोइकै इससंघातविषेप्रवेशकरताभया इति ॥ यातैं आत्मज्ञानतैं अज्ञानकेनिवृत्तिहुए यह जीवात्मा आपणेस्वरूपभूतब्रह्मकूंप्राप्तहोइकै तिसब्रह्मतैं पुनःआवृत्तिकूंनहींप्राप्तहोवैहै यहअर्थ जोपूर्व कथनकऱ्याथा सोयुक्तहींहै ॥ शंका ॥ हेभगवन् स्वस्वरूपकूंप्राप्त हुआभी यहजीवात्मा सुषुप्तिअवस्थातैं पुनः किसप्रकार आवैहै ॥ ऐसीअर्जुनकीशंकाकेहुए श्रीभगवान् कहैहै ॥ (मनःषष्ठानिइति) हेअर्जुन मनहै षष्ठाजिनोंविषे ऐसेजो श्रोत्र त्वक् चक्षु रसन घ्राण यहपंचज्ञानइंद्रियहैं ॥ अर्थात् इंद्ररूपआत्माके शब्दादिकविषयोंकेउपलब्धिकारणरूपकरिकै लिंगरूप जेश्रोत्रादिकइंद्रियहैं ॥

जेश्रोत्रादिकइंद्रिय जाग्रत्स्वप्नकेभोगजनककर्मोंकेक्षयहुए प्रकृतिविषेस्थितहैं ॥ अर्थात् अज्ञानरूपप्रकृतिविषे सूक्ष्मरूपकरिकैस्थितहैं ॥ ऐसेमनसहितइंद्रियोंकूं सोजीवात्मा पुनः जाग्रत्भोगोंकेजनककर्मोंकेउदयहुए तिनभोगोंकेवासतै आकर्षणकरैहै ॥ अर्थात् जैसे कूर्मनामाजंतु आपणेशरीरविषेलीन कऱ्येहुए शिरपादादिकअंगोंकूं पुनः तिसआपणेशरीरतैं बाह्यप्रगटकरैहै ॥ तैसे सोजीवात्माभी तिसअज्ञानरूपप्रकृतितैं मनसहितइंद्रियोंकूं शब्दादिकविषयोंकेग्रहणकी योग्यतारूपकरिकै पुनःप्रगटकरैहै ॥ यातैं यहअर्थसिद्धभया ॥ आत्मज्ञानतैं अनावृत्तिहुएभी अज्ञानतैं पुनःआवृत्ति कोईअनुपपन्ननहींहै किंतु अज्ञानतैं इस जीवात्माकी पुनःआवृत्ति युक्तहींहै ॥ ७ ॥ ॥ शंका ॥ हेभगवन् यहजीवात्मा जिसकालविषे तिनमनसहितइंद्रियोंकूं आकर्षणकरैहै ॥ ऐसीअर्जुनकी जिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै ॥

(मू० श्लो०) शरीरंयदवाप्नोतियच्चाप्युत्क्रामतीश्वरः ॥ गृहीत्वैतानिसंयातिवायुर्गंधानिवाशयात् ॥ ८ ॥ शरीरम् । यत् । अवाप्नोति । यत् । च । अपि । उत्क्रामति । ईश्वरः । गृहीत्वा । एतानि । संयाति वायुः । गंधान् । इव । आशयात् ॥ ८ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जिसकालविषे यहजीवात्मा उत्क्रमणकरैहै तिसकालविषे तिनइंद्रियोंकूं आकर्षणकरैहै तथा जिसकालविषे दूसरे शरीरकूं प्राप्तहोवैहै तिसकालविषे इनमनसहितइंद्रियोंकूं ग्रहणकरिकै भी जावैहै जैसे पुष्पादिकस्थानतैं वायु गंधकूं ग्रहण करिकैजावैहै ॥ ८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन देहइंद्रियरूपसंघातकास्वामीहोणेतैं ईश्वररूप जोयहजीवात्माहै ॥ सो यहजीवात्मा जिसकालविषे उत्क्रमणकरैहै ॥ अर्थात् इसदेहतैंबाह्यनिर्गमनकरैहै ॥ तिसकालविषे यहजीवात्मा जिसदेहतैंबाह्य निर्गमनकरैहै तिसदेहतैं मनसहितश्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं आकर्षणकरैहै ॥ हेअर्जुन यहजीवात्मा तिनमनसहितइंद्रियोंकूं केवल आकर्षणहींनहींकरैहै ॥ किंतु यहजीवात्मा जिसकालविषे इसपूर्वशरीरतैं दूसरेशरीरकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तिसकालविषे तिनमनसहित श्रोत्रादिकइंद्रियोंकूं ग्रहणकरिकैभी जावैहै ॥ तिनइंद्रियोंकूंछोडिकै जातानहीं ॥ अर्थात् जैसे तिसपरित्यागकऱ्येहुएपूर्वलेशरीरविषे पुनःआवैनहीं ॥ तैसे तिन इंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै जावैहै ॥ यहअर्थ (संयाति) इसवचनविषे सं इसशब्दकरिकै श्रीभगवान्नैं सूचनकऱ्या ॥ अब इसस्थूलशरीरकेविद्यमानहुएहीं तिसशरीरतैं इंद्रियोंकेग्रहणकरणेविषे श्रीगवान् दृष्टांतकूं कथनकरैहै (वायुर्गंधानिवाशयात्इति) हेअर्जुन जैसे पुष्पादिकस्थानतैं गंधरूपसूक्ष्मअंशोंकूंग्रहणकरिकै वायु पूर्वादिकदिशावोंविषे गमनकरैहै ॥ तैसे यहजीवात्माभी इसस्थूलदेहतैं मनसहितइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकै परलोकविषेगमनकरैहै ॥ इति ॥ ८ ॥ ❀

॥२६३॥

॥ अब श्रीभगवान् तिनइंद्रियोंका कथनकरताहुआ जिसप्रयोजनवासतै यहजीवात्मा तिनइंद्रियोंकूंग्रहणकरिकैनिर्गमनकरेहै तिसप्रयोजनकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) श्रोत्रंचक्षुःस्पर्शनंचरसनंघ्राणमेवच ॥ अधिष्ठायमनश्चायंविषयानुपसेवते ॥ ९ ॥ श्रोत्रम् । चक्षुः । स्पर्शनम् । च । रसनम् । घ्राणम् । एव । च । अधिष्ठाय । मनः । च । अयम् । विषयान् । उपसेवते ॥ ९ ॥ इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन यह जीवात्मा श्रोत्रइंद्रियकूं तथा चक्षुइंद्रियकूं तथा त्वक्इंद्रियकूं तथारसनइंद्रियकूं तथा घ्राणइंद्रियकूं तथा मनकूं आश्रयणकरिकै हीं शब्दादिकविषयोंकूं भोगताहै ॥ ९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन यहजीवात्मा श्रोत्रइंद्रियकूं तथाचक्षुइंद्रियकूं तथात्वक्इंद्रियकूं तथारसनइंद्रियकूं तथाघ्राणइंद्रियकूं तथामनकूं आश्रयणकरिकैहीं शब्दस्पर्शादिकविषयोंकूंभोगेहै ॥ ईहां (घ्राणमेवच) इसवचनविषेस्थितजोचकारहै ॥ तिसचकारकरिकै वाकादिकपंचकर्मइंद्रियोंका तथाप्राणकाभी ग्रहणकरणा ॥ और (मनश्च) इसवचनविषे स्थितजो चकारहै ॥ तिसचकारकरिकै बुद्धि चित्त अहंकार इनतीनोंकाभी ग्रहणकरणा ॥ अर्थात् पंचज्ञानइंद्रिय पंचकर्मइंद्रिय पंचप्राण चतुष्टयअंतःकरण इनसर्वोंकूं आश्रयणकरिकैहीं यहजीवात्मा शब्दादिकविषयोंकूंभोगेहै ॥ तिनइंद्रियादिकोंकेआश्रयणकीयेतैंविना केवलशुद्धआत्मा तिनशब्दादिकविषयोंकूंभोगतानहीं ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै तहांश्रुति ॥ (आत्मेंद्रियमनोयुक्तंभोक्तेत्याहुर्मनीषिणः) ॥ अर्थयह ॥ देहश्रोत्रादिकइंद्रियोंकरिकै तथामनकरिकै युक्तहुआहीं आत्मा भोक्ताहोवैहै ॥ इसप्रकार वेदवेत्ताबुद्धिमान्पुरुष कथनकरेहैं इति ॥ ९ ॥ ❀ ॥ ऐसेदर्शनयोग्यभीआत्माकूं मूढपुरुषदेखतेनहीं ॥ किंतु विवेकीपुरुषहीं देखेहैं ॥ इसअर्थकूं अब श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) उत्क्रामंतंस्थितंवापिभुंजानंवागुणान्वितम् ॥ विमूढानानुपश्यंतिपश्यंतिज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥ उत्क्रामंतं । स्थितम् । वा । अपि । भुंजानम् । वा । गुणान्वितम् । विमूढाः । न । अनुपश्यंति । पश्यंति । ज्ञानचक्षुषः ॥ १० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन उत्क्रमणकरतेहुए अथवा तिसीहींदेहविषेस्थितहुए अथवा विषयोंकूंभोगतेहुए तथागुणोंकरिकैयुक्तहुए ऐसेआत्माकूं भी विमूढपुरुष नहीं देखसकतेहैं किंतु ज्ञानरूपचक्षुवालेपुरुषहीं तिसआत्माकूं देखतेहैं ॥ १० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन वास्तवतैंगमनादिकसर्वविकारोंतैंरहितहुआभी अंतःकरणादिकउपाधिकेतादात्म्यअध्यासतैं पूर्वशरीरकापरित्यागकरिकै दूसरेशरीरकेप्रति गमनकरताहुआ जोयहआत्माहै ॥ अथवा तिसपूर्वलेशरीरविषेहीं स्थितहुआ जोयहआत्माहै ॥ अथवा तिसदूसरेशरीरविषे शब्दादिकविषयोंकूंभोगताहुआ

जोयहआत्माहै ॥ तथा सुखदुःख मोह रूप सत्त्व रज तम इनगुणोंकरिकैयुक्त जोयहआत्माहै इसप्रकारकी सर्वअवस्थावोंविषे दर्शनकेयोग्यभी इसआत्माकूं विमूढपुरुष नहींदेखिसकेहैं ॥ तहांइसश्लोककेविषयभोगोंकी तथास्वर्गादिकलोकोंकेविषयभोगोंकी वासनावोंकरिकै आकर्षणहुआहैचित्तजिनोंका ऐसेजे आत्मा अनात्माकेविवेककरणेविषेअयोग्यपुरुषहैं तिनोंकानाम विमूढहै ॥ ऐसेविमूढपुरुष तिनउत्क्रमणादिकअवस्थावोंविषे इसआत्मादेवकूं देहादिकोंतैंभिन्नकरिकै जानि सकतेनहीं ॥ यहबडाकष्टहै ॥ और जेपुरुष श्रुतिप्रमाणजन्यज्ञानरूपचक्षुवालेहैं ॥ तेविवेकीपुरुष तौ तिनउत्क्रमणादिक सर्वअवस्थावोंविषे इसआत्मादेव कूंदेहादिकोंतैंभिन्नकरिकैदेखेहैं इति ॥ १० ॥ ❀ ॥ अब (पश्यंतिज्ञानचक्षुषः) इसवचनकेअर्थकूं तथा (विमूढानानुपश्यंति) इसवचनकेअर्थकूं यथा क्रमतैं स्पष्टकरिकैवर्णनकरेहैं ॥

(मू० श्लो०) यतंतोयोगिनश्चैनंपश्यंत्यात्मन्यवस्थितम् ॥ यतंतोप्यकृतात्मानोनैनंपश्यंत्यचेतसः ॥ ११ ॥ यतंतः । योगिनः । च । एनं । पश्यंति । आत्मनि । अवस्थितं । यतंतः । अपि । अकृतात्मानः । न । एनं । पश्यति । अचेतसः ॥११॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन प्रयत्नकरतेहुए योगीपुरुष हीं आपणीबुद्धिविषे स्थित इसआत्माकूं देखतेहैं और प्रयत्नकरतेहुए भी अशुद्धअंतःकरण वाले अविवेकीपुरुष इसआत्माकूं नहीं देखतेहैं ॥ ११ ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ध्यानादिकउपायोंकरिकै यत्नकरतेहुए जेशुद्धअंतःकरणवाले योगीपुरुषहैं ॥ तेयोगीपुरुषहीं आपणीबुद्धिविषेस्थित इसआनंदस्वरूपआत्मा कूं साक्षात्कारकरेहैं ॥ और जिनपुरुषोंनैं यज्ञादिकनिष्कामकर्मोंकरिकै आपणेअंतःकरणकूंशुद्धनहींकन्याहै ॥ तथाअशुद्धअंतःकरणवालेहोणेतैंहीं जेपुरुष आत्माअनात्माकेविवेकतैंरहितहैं ॥ तेअशुद्धअंतःकरणवालेअविवेकीपुरुषतौ प्रयत्नकरतेहुएभी इसआत्मादेवकूं साक्षात्कारकरिसकतेनहीं इति ॥ ११ ॥ ❀ ॥ तहांसर्वजगत्केप्रकाशकरणेविषेसमर्थभी सूर्यचंद्रमादिक जिसपरब्रह्मरूपपदकूं प्रकाशकरणेविषेसमर्थहोतेनहीं ॥ तथा जिसपदकूंप्राप्तहुए मुमुक्षुजन पुनःसंसारकी प्राप्तिवासतै आवतेनहीं ॥ और जैसेमहाकाशतैं घटादिकउपाधिकृतभेदवालेहुए घटाकाशादिक तिसमहाकाशके कल्पितअंशभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसे जिसपरब्रह्मरूपप दके उपाधिकृतभेदकूंप्राप्तहोइकै कल्पितअंशादिक तिसमहाकाशकेसाथि अभेदभावकूंप्राप्तहोवैहैं ॥ तैसेमहावाक्यजन्यसाक्षात्कारकरिकै अविद्यादिकउपाधियोंकें निवृत्तहुए यहजीव जिसपरब्रह्मरूप पदकेसाथि अभेदभावकूं प्राप्तहोवैहै ॥ तिसपरब्रह्मरूपपदके सर्वात्मपणेकूं तथासर्वव्यवहारोंके साधकपणेकूं दिखाइकरिकै (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहं) इसपूर्व अध्याय उक्तवचनके अर्थका वर्णनकरणे वासतै अबच्यारि श्लोकों करिकै श्रीभगवान् आपणे विभूतियोंके संक्षेपकूं कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) यदादित्यगतंतेजोजगद्भासयतेखिलम् ॥ यच्चंद्रमसियच्चाग्नौतत्तेजोविद्धिमामकम् ॥ १२ ॥ यत् आदित्यगतं ।
तेजः । जगत् । भासयते । अखिलम् । यत् । चंद्रमसि । यत् । च । अग्नौ । तत् । तेजः । विद्धि । मामकम् ॥ १२ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥
हेअर्जुन आदित्यविषेस्थित जो तेजहै तथा चंद्रमाविषेस्थित जोतेजहै तथा अग्निविषेस्थित जोतेजहै जोतेजइससर्व जगतकूं
प्रकाशकरताहै तिसे तेजकूं तूंमेरास्वरूपहीं जान ॥ १२ ॥ ((इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ तहां (नतत्रसूर्योभातिनचंद्रतारकंनेमाविद्युतोभांतिकुतोयमग्निः) यहश्रुतिकाअर्द्धभाग(नतद्भासयतेसूर्यः)इत्यादिकश्लोककरिकै पूर्व व्याख्यानकऱ्याथा॥ अब (तमेवभांतमनुभातिसर्वंतस्यभासासर्वमिदंविभाति) यहश्रुतिकाअर्द्धभाग (यदादित्यगतंतेजो) इसश्लोककरिकै श्रीभगवानूनैं व्याख्यानकरीताहै ॥ हेअर्जुन आदित्यविषे स्थितजो चैतन्यात्मकज्योतिरूप तेजहै ॥ तथा चंद्रमाविषेस्थित जोचैतन्यात्मकज्योतिरूप तेजहै ॥ तथा अग्निविषेस्थित जोचैतन्यात्मक ज्योतिरूप तेजहै ॥ जोचैतन्यज्योतिरूपतेज इससर्वजगतकूं प्रकाशकरेहै ॥ तिसचैतन्यात्मकज्योतिरूपतेजकूं तूंअर्जुन मैंपरमात्माकास्वरूपभूतही जान ॥ यद्यपि स्थावरजंगमरूपसर्वपदार्थोंविषे सोचैतन्यात्मक ज्योति समानहीहैं ॥ तथापि सत्वगुणकीउत्कर्षताकरिकै तेआदित्यादिक सर्वतैंउत्कृष्टहैं॥ याकारणतैं तिनआदित्यादिकोंविषेहीं सोचैतन्यरूपज्योति अतिसैंकरिकैअभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तमोगुणप्रधान तथारजोगुणप्रधान अन्यपदार्थोंविषे स्वरूपतैं विद्यामान हुआभी सोचैतन्यरूपज्योति स्पष्टकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोतानहीं ॥ यातैं तिनपदार्थोंकीअपेक्षाकरिकै आदित्यादिकोंविषे विशेष्यताबोधनकरणेवासतै श्रीभगवानूनैं ईहां आदित्यचंद्रमादिकोंका ग्रहणकऱ्याहै ॥ जैसे मुखकीसमीपताकेतुल्यहुएभी काष्ठभित्तिआदिकअस्वच्छपदार्थोंविषे सोमुख प्रतिबिंबरूपकरिकै अभिव्यक्तहोवैनहीं ॥ और स्वच्छतथाअतिस्वच्छ ऐसे जे दर्पणादिकपदार्थहै ॥ तिनदर्पणादिकपदार्थोंविषेतौं तास्वच्छताकीन्यूनअधिकताकरिकै सोमुखभी न्यूनअधिकभावतैं प्रतिबिंबरूपकरिकै अभिव्यक्त होवैहै ॥ तैसे सोचैतन्यरूपज्योतिभी स्वरूपतैंसर्वपदार्थोंविषेविद्यमानहुआभी सत्वगुणप्रधानआदित्यादिकोंविषेहीं स्पष्टरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोवैहै ॥ तमोगुणप्रधानघटादिकपदार्थोंविषे स्पष्टरूपकरिकै अभिव्यक्तिकूंप्राप्तहोतानहीं इति ॥ अथवा (यदादित्यगतंतेजो) इसवचनविषे तेजशब्दका कथनकरिकै (तत्तेजोविद्धिमामकम्) इसवचनविषे जोपुनःतेजशब्दका कथनकऱ्याहै ॥ तिसतैं इसश्लोकका यहदूसराअर्थभी प्रतीत होवैहै ॥ आदित्यविषे तथाचंद्रमाविषे तथाअग्निविषे स्थित जो परकेप्रकाशकरणेविषेसमर्थ श्वेतभास्वररूप तेजहै ॥ जोतेज रूपवानूसर्ववस्तुरूपजगतकूं प्रकाश करेहैं ॥ सोतेज मैंपरमेश्वरकाहीं तूंजान ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकेविभूतिरूप तिसतेजविषे तूं मैंपरमेश्वरकीबुद्धिकर इति ॥ इसप्रकारतैं परमेश्वरकीविभूतिकथन

करणेवासतै यहदूसराअर्थभी संभवहोइसकेहै ॥ जोकदाचित् इसश्लोककूं परमेश्वरकीविभूतिकथनकरिकै नहींअंगीकारकरिये ॥ तौं पुनःतेजशब्दकेग्रहणतैं विनाहीं (तन्मामकंविद्धि) इतनैंमात्रवचनकूंहीं श्रीभगवान् कथनकरता इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (यदादित्यगतंतेजो) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ आदित्य चंद्रमा अग्नि इनशब्दोंकरिकै चक्षुआदिककरणोंकेअधिष्ठानतारूप सूर्यादिकदेवतावोंका तथासूर्यादिकदेवतावोंकरिकैअनुगृहीत चक्षुआदिककरणोंका ग्रहणकरणा ॥ यातैं यहअर्थसिद्धहोवैहै ॥ चक्षुआदिकबाह्यकरणोंकेअधिष्ठातारूप जेसूर्यादिकदेवताहैं ॥ तथा तिनसूर्यादिकदेवतावोंकरिकैअनुगृहीत जेचक्षुआ दिकबाह्यकरणहैं तिनदोनोंविषेविद्यमानजो रूपादिकविषयोंकेप्रकाशकरणेकासामर्थ्यरूपतेजहै ॥ सोतेज मैंपरमेश्वरकाहीं तूंजान ॥ तहांश्रुति ॥ (येनसूर्यस्तपतितेजसेद्धःयेनचक्षूंषिपश्यंति) ॥ अर्थयह ॥ जिसचैतन्यरूपतेजकरिकै यहसूर्य तप्तकरेहै ॥ तथा जिसचैतन्यरूपतेजकरिकै यहचक्षु रूपादिकपदार्थोंकूंदेखेहैं इति ॥ इसप्रकारमनविषे तथातामनकेअभिमानीचंद्रमादेवताविषे जो अंतरप्रपंचकेप्रकाशकरणेकासामर्थ्यरूपतेजहै ॥ तिसतेजकूंभी तूं मैंपरमेश्वरकाहींजान ॥ इसप्रकार वाक्इंद्रियविषे तथातावाक्इंद्रियकेअभिमानीअग्निदेवताविषे जो अव्याकृतआदिकविषयोंकेप्रकाशकरणेकासामर्थ्यरूपतेजकूंभी तूं मैंपरमेश्वर काहीं जान इति ॥ १२ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) गामाविश्यचभूतानिधारयाम्यहमोजसा ॥ पुष्णामिचौषधीःसर्वाःसोमोभूत्वारसात्मकः ॥ १३ ॥ गाम् । आविश्य । च । भूतानि । धारयामि । अहम् । ओजसा । पुष्णामि । च । ओषधीः । सर्वाः । सोमः । भूत्वा । रसात्मकः ॥ १३ ॥ (इतिप०) हेअर्जुन पुनः आपणेबलकरिकै इसपृथिवीकूं अत्यंतदृढकरिकै सर्वभूतोंकूं मैंपरमेश्वरहीं धारणकरूंहूं तथा सर्वरसस्वभाववाला सोमरूप होइकै सर्व ओषधियोंकूं मैंपरमेश्वरहीं पुष्टिवालीकरूंहूं ॥ १३ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं पृथिवीदेवतारूपकरिकै इसपृथिवीकूं सर्वओरतैंव्याप्तकरिकै तथा धूलीमुष्टिकेतुल्य इसपृथिवीकूं आपणेबलकरिकै अत्यंतदृढ करिकै इसपृथिवीऊपरिरहणेहारे स्थावरजंगमरूपसर्वभूतोंकूं धारणकरताहूं ॥ जैसे वायु आपणीशक्तिकरिकैं मेघमंडलविषेप्रवेशकरिकै तामेघमंडलविषेस्थित जलोंकूं धारणकरेहै ॥ तैसे मैंपरमेश्वरभी पृथिवीदेवतारूपकरिकै इसपृथिवीविषेप्रवेशकरिकै आपणीशक्तिकरिकै इसपृथिवीकूं अत्यंतदृढकरिकै तिनस्थावरजं गमरूपसर्वभूतोंकूं धारणकरूंहूं ॥ जोकदाचित् मैंपरमेश्वर आपणेबलकरिकै इसपृथिवीकूंअत्यंतदृढकरिकै इनसर्वभूतोंकूं धारणकरताहोवूं ॥ तौं सिकताकेमु ष्टितुल्य यहपृथिवी शिघ्रहीं विशीर्णभावकूंप्राप्तहोवैगी ॥ अथवा यहपृथिवी अधोदेशचलीजावैगी ॥ यहवार्त्ता श्रुतिविषेभी कथनकरीहै ॥ तहांश्रुति ॥ (येनद्यौ

रुयापृथिवीचदृढा । सदाधारपृथिवीं ॥) अर्थयह जिसपरमात्मादेवनें स्वर्गलोक तथामहान्पृथिवी अत्यंतदृढकऱ्येहैं ॥ जिसकारिकै गुरुत्वधर्मवालेहुएभी यहस्वर्ग तथापृथिवी नीचेपतनहोतेनहीं तथा यहपृथिवी सत्यपरमात्मादेवकेहींआधारहै इति ॥ किंवा सर्वरसस्वभाववाला जोसोमहै ॥ तिससोमरूपहोइकै मैंपरमेश्वरहीं पृथिवीतैंउत्पन्नहुई व्रीहियवादिकसर्वओषधियोंकूं पुष्टिमान्करूंहूं तथास्वादुरसवालाकरूंहूं इति ॥ १३ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०) अहंवैश्वानरोभूत्वाप्राणिनांदेहमाश्रितः ॥ प्राणापानसमायुक्तःपचाम्यन्नंचतुर्विधम् ॥ १४ ॥ अहम् । वैश्वानरः । भूत्वा । प्राणिनाम् । देहम् । आश्रितः । प्राणापानसमायुक्तः । पचामि । अन्नम् । चतुर्विधम् ॥ १४ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन मैंपरमेश्वरहीं जठराग्निरूपहोइकै सर्वप्राणीयोंकेदेहकूं आश्रयणकरताहूआ तथाप्राण अपानकरिकैप्रज्वलितहुआ च्यारि प्रकारके अन्नकूं पाचनकरूंहूं ॥ १४ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन (अयमग्निर्वैश्वानरोयोयमंतःपुरुषेयेनेदमन्नंपच्यते)॥अर्थयह ॥जोअग्नि इसपुरुषकेअंतरस्थितहै॥ तथा जिसअग्निनें यहच्यारिप्रकारकाअन्न पाचनकरीताहै ॥ सोयहअग्नि वैश्वानरहै इति ॥ इसश्रुतिनें वैश्वानरनामकरिकैकथनकऱ्याजो जठराअग्निहै ॥ सोजठराअग्निरूपहोइकै मैंपरमेश्वरहीं सर्वप्राणीयोंके देहोंकेअंतरप्रविष्टहुआ तथातिसजठराअग्निकूंप्रज्वालनकरणेहारे प्राणअपानकरिकैयुक्तहुआ प्राणीयोंनैंभोजनकऱ्येहुए भक्ष्य भोज्य लेह्य चोष्य इसच्यारिप्रकारके अन्नकूं पाचनकरूंहूं ॥ तहां जोवस्तु दांतोंसैंखंडनकरिकै भक्षणकऱ्याजावैहै तावस्तुकूं भक्ष्य कहेहैं ॥ जैसे पुडीअपूपादिकहैं ॥ तिसभक्ष्यवस्तुकूं चर्व्यभी कहेहैं ॥ और जोवस्तु दांतोंकेव्यापारतैंविनाहीं केवल जिव्हांसैंहलाइकै भीतर निगल्याजावैहै तावस्तुकूं भोज्य कहेहैं ॥ जैसे पायससूपादिकहैं ॥ और जोवस्तु जिव्हाविषेप्राप्तहुआहीं रसकेस्वादमात्रकरिकै भीतर निगल्याजावैहै ॥ तथा किंचित्द्रवीभूतहोवैहैं ॥ तावस्तुकूं लेह्य कहेहैं ॥ जैसे गुड आम्ररस शिखरिण्य आदिकहैं ॥ और जोवस्तु दांतोंसैंनिष्पीडनकरिकै ताकेरस अंशकूं भीतरनिगलिकै परिशेषतैंरह्येहुएअसारअंशकूं बाह्यपरित्यागकरीताहै तावस्तुकूं चोष्य कहेहैं ॥ जैसे इक्षुदंडादिकहैं इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (पचाम्यन्नंचतुर्विधम्) ॥ इसवचनका यहअर्थकऱ्याहै ॥ मैंपरमेश्वरहीं जठराग्निरूप होइकै मनुष्यादिकसर्वप्राणीयोंकेअंतरस्थितहुआ पार्थिव आप्य तैजस वायव्य इसच्यारिप्रकारकेअन्नकूं पाचनकरूंहूं ॥ तहां मनुष्यादिकप्राणीयोंकातौं व्रीहियवादिक पार्थिव अन्नहै ॥ और चातकादिकप्राणीयोंकातौं जलरूप आप्य अन्नहै ॥ और वालखिल्यादिकप्राणीयोंकातौं अग्निरूप तैजस अन्नहै ॥ और सर्पादिकप्राणीयोंकातौं वायुरूप वायव्य अन्नहै इति ॥ तहां जोभोक्ताहै सो अग्निवैश्वानररूपहै ॥ और जोभोज्यअन्नहै सो सोमरूपहै ॥ इसप्रकार यहअग्नी

मोमदोनोंहीं सर्वरूपहैं ॥ इसप्रकारकेध्यानकरणेहारेपुरुषकूं अन्नकेदोषकालेपहोवैनहीं ॥ इसप्रकारका जोशास्त्रविषे फलसहितध्यान कथनकऱ्याहै सोभी ईहां जानिलेणा इति ॥ १४ ॥ ❀ ॥ किंच ॥

(मू० श्लो०)सर्वस्यचाहंहृदिसन्निविष्टोमत्तःस्मृतिर्ज्ञानमपोहनंच ॥ वेदैश्चसर्वैरहमेववेद्योवेदांतकृद्वेदविदेवचाहम् ॥१५॥ सर्वस्य । च । अहं । हृदि । संनिविष्टः । मत्तः । स्मृतिः । ज्ञानम् । अपोहनं । च । वेदैः । च । सर्वैः । अहम् । एव । वेद्यः । वेदांतकृत् । वेदवित् । एव । च । अहम् ॥ १५॥ (इतिपदच्छेदः)॥हेअर्जुन पुनःमैंपरमात्मादेवहीं सर्वप्राणीयोंके बुद्धिविषे जीवात्मारूपहोइकै प्रविष्टहुआहूं इसकारणतैं मैंआत्मादेवतैंहीं तिनसर्वप्राणीयोंकूं स्मृति तथाज्ञान तथा तिसस्मृतिज्ञानदोनोंकाअभाव होवैहै तथा सर्व वेदोंकरिकै मैंपरमेश्वर हीं जानणेयोग्यहूं तथावेदांतअर्थकीसंप्रदायकाप्रवर्त्तकहूं तथा मैंपरमेश्वर हीं सर्ववेदोंकेअर्थका वेत्ताहूं ॥ १५ ॥(इतिपदार्थः)॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन ब्रह्मातैंआदिलेके स्थावरपर्यंत जितनैंकीऊचनीचप्राणीहैं ॥ तिनसर्वप्राणीयोंकीबुद्धिविषे मैंपरमात्मादेवहीं जीवात्मारूपहोइकै प्रविष्टहुआहूं ॥ तहांश्रुति॥ (सएवइहप्रविष्टः । अनेनजीवेनात्मानुप्रविश्यनामरूपेव्याकरवाणि॥) अर्थयह॥ सोपरमात्मादेव जीवात्मारूपहोइकै इससंघातविषे प्रवेशकरताभया ॥ और इसजीवात्मारूपकरिकै इससंघातविषेप्रवेशकरिकै मैंपरमात्मादेव नामरूपकूंस्पष्टकरूं इति ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतियां इनसर्वसंघातोंविषे परमात्मादेवकाहीं जीवात्मारूपकरिकैप्रवेशकूं कथनकरेहैं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं जीवब्रह्मकाअभेदकथनकऱ्या ॥ इसीहींजीवब्रह्मकेअभेदकूं (तत्त्वमसि अहंब्रह्मास्मि) इत्यादिकश्रुतियांभी कथनकरेहैं ॥ हेअर्जुनजिसकारणतैं मैंपरमात्मादेवहीं इनसर्वप्राणीयोंकीबुद्धिविषे जीवात्मारूपहोइकै प्रविष्टहुआहूं ॥ इसकारणतैं इनसर्वप्राणीयोंकूं जाजास्मृति होवैहै तथा जोजोज्ञानहोवैहै ॥ सास्मृति तथासोज्ञान मैंआत्मादेवतैंहीं होवैहै ॥ तहां पूर्वअनुभवकऱ्येहुएअर्थकूंविषयकरणेहारी जा संस्कारजन्य अंतःकरणकीवृत्तिविशेषहै ताकानाम स्मृतिहै ॥ सास्मृति अयोगीपुरुषोंकूंतौं इसजन्मविषे पूर्वअनुभवकऱ्येहुएअर्थविषयकहीं होवैहै ॥ और योगीपुरुषोंकूंतौं जन्मांतरोंविषेअनुभवकऱ्येहुएअर्थविषयकभी होवैहै ॥ इसप्रकार सोप्रत्यक्षज्ञानभी अयोगीपुरुषोंकूंतौं विषयइंद्रियकेसंयोगजन्यहीं होवैहै ॥ और योगीपुरुषोंकूंतौं देशकालकरिकैव्यवहितवस्तुकाभी सोप्रत्यक्षज्ञानहोवैहै ॥ सोदोनोंप्रकारकाज्ञान तथासादोनोंप्रकारकीस्मृति मैंआत्मादेवतैंहीं होवैहै ॥ और काम क्रोध शोक मोह इत्यादिकोंकरिकै व्याकुलहैचित्तजिनोंका ऐसेपुरुषोंकूं जो तिस स्मृतिका तथाज्ञानका अभावहोवैहै ॥ सोअभावरूपअपो

हनभी मैंआत्मादेवतैंहींहोवैहै इति ॥ इसप्रकार श्रीभगवान् आपणी जीवरूपताकूंकथनकरिकै अब ब्रह्मरूपताकूंकथनकरेहै॥ (वेदैश्चसर्वैःइति) हेअर्जुन ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंकरिकै मैंपरमात्मादेवहीं जानणेयोग्यहूं ॥ तहांश्रुति ॥ (सर्वेवेदायत्पदमामनंति) ॥ अर्थयह ॥ कर्मकांड उपासनाकांड ज्ञानकांड यहतीनकांडरूप जितनैंकी ऋगादिकवेदहैं ॥ तेसर्ववेद जिसपरमात्मादेवरूपपदकूंकथनकरेहैं इति ॥ यद्यपि ऋगादिकवेदोंकेकर्मकांड तथाउपासनाकांड इंद्रादिकदेवतावोंकूंहीं कथनकरेहैं ॥ तथापि मैंपरमात्मादेवहीं तिनइंद्रादिकसर्वदेवतावोंका आत्मारूपहूं ॥ यातैं तिनइंद्रादिकदेवतावोंकूंकथनकरतेहुएभी तेकर्मउपासनाकांड मैंपरमात्मादेवकूंहीं कथनकरेहैं ॥ तहां परमात्मादेवहीं इंद्रादिकसर्वदेवतारूपहै इसअर्थकूं (इंद्रंमित्रंवरुणमग्निमाहुरथोदिव्यःससुपर्णोगरुत्मान् ॥ एकंसद्विप्रा बहुधावदंत्यग्निंयमंमातरिश्वानमाहुः ॥ एषउह्येवसर्वेदेवाः) ॥ इत्यादिकअनेकश्रुतियां कथनकरेहैं ॥ पुनः कैसाहूं मैंपरमात्मादेव वेदांतकृत्हूं ॥ अर्थात् वेदव्यासादिकरूपकरिकै मैंपरमात्मादेवहीं उपनिषद्रूपवेदांतकेअर्थकीसंप्रदायका प्रवर्त्तकहूं ॥ हेअर्जुन केवल वेदांतअर्थकेसंप्रदायमात्रकाहीं मैं प्रवर्त्तकनहींहूं ॥ किंतु वेदवित्भी मैंहींहूं ॥ अर्थात् कर्मकांड उपासनाकांड ज्ञानकांड यहतीनकांडरूप जितनैंकीमंत्रब्राह्मणरूप सर्ववेदहैं तिनसर्ववेदोंकेअर्थकूंजानणेहाराभी मैंपरमात्मादेवहींहूं ॥ यातैं (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) यहजो पूर्वअध्यायविषेवचनकह्याथा सोयथार्थहींहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं (सर्वस्यचाहम्) इसश्लोकका यहअर्थकऱ्याहै ॥ सर्वप्राणीयोंकीबुद्धिरूपगुहाविषे मैंपरमात्मादेव क्षेत्रज्ञनामाजीवरूपकरिकै अत्यंतसमीपहुआ स्थितहूं ॥ इसकारणतैं सर्वप्राणीरूप मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ इतनैंकहणेकरिकै श्रीभगवान्नैं जीवब्रह्मविषे भेददृष्टि कदाचित्भीनहींकरणी यहअर्थ सूचनकऱ्या ॥ तहां यहसर्वजगत् परमेश्वररूपहींहै इसप्रकार सर्वत्र परमेश्वरबुद्धिकरिकै जेपुरुष परमेश्वरकीउपासनाकरेहैं ॥ तथा जेपुरुष तिसउपासनाकूंनहींकरेहैं ॥ तिनदोनोंप्रकारकेपुरुषोंकूं जोफल प्राप्तहोवैहै ॥ तिसफलकूं श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥ (मत्तःस्मृतिर्ज्ञानमपोहनंचइति) हेअर्जुन मैंपरमेश्वरकीउपासनाकरिकै शुद्धहुआहैअंतःकरण जिनोंका ऐसेअधिकारी पुरुषोंकूंतौं मैंपरमेश्वरतैंहीं गुरुशास्त्रकेअनुग्रहकरिकै स्मृतिहोवैहै ॥ अर्थात् (सआत्मा तत्त्वमसि) इसवचनकरिकै श्रीगुरुवोंनैं जो त्रिविधपरिच्छेदतैंरहित निर्विशेषआत्मा तूंहैं इसप्रकारतैं बोधनकऱ्याहै ॥ सोनिर्विशेषशुद्धआत्मा मैंहूं इसप्रकारकी जो तिसीहींआत्माविषे स्वात्मपणेकीस्मृतिहै ॥ सास्मृतिभी तिनअधिकारी पुरुषोंकूं मैंपरमेश्वरतैंहींहोवैहै ॥ तथा यहसर्वजगत् तथामैं ब्रह्मरूपहींहैं इसप्रकार सर्वजगत्विषे तथाआपणेविषे जो ब्रह्ममात्रपणेका ज्ञानहै ॥ सोज्ञानभी तिनउपासकपुरुषोंकूं मैंपरमेश्वरतैंहीं होवैहै ॥ और जेपुरुष मैंपरमेश्वरकीउपासनातैंरहितहैं ॥ तथा मलिनबुद्धिवालेहैं ॥ तथा रागद्वेषादिकदोषोंकरिकै दुष्टहैं ॥ ऐसेबहिर्मुखपुरुषोंकूंतिसस्मृतिका तथातिसज्ञानका जो अपोहनहै अर्थात् अप्राप्तिहै ॥ साअप्रातिभी मैंपरमेश्वरतैंहींहोवैहै ॥ हेअर्जुन पुनःमैंपरमेश्वर कैसाहूं वेदांतकृत्हूं ॥

अर्थात् हिरण्यगर्भरूपब्रह्माकेतांई वेदांतकीप्राप्तिरूपअनुग्रहकर्त्ता मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ तहांश्रुति ॥ (योब्रह्माणंविदधातिपूर्वंयोवैवेदांश्चप्रहिणोतितस्मै) ॥ अर्थयह ॥ जोपरमेश्वर पूर्व हिरण्यगर्भरूपब्रह्माकूं उत्पन्नकरताभया ॥ तथा जोपरमेश्वर तिसब्रह्माकेतांई सर्ववेदोंकूंदेताभया इति ॥ अथवा (वेदांतकृत्) इसवचनका यहअर्थ करणा ॥ इसश्लोकविषे अधिकारीशिष्योंकेतांई आचार्यरूपकरिकै वेदांतकेअर्थकाप्रकाशकरणेहारा मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ पुनःकैसाहूंमैं वेदवित्हूं ॥ तहां वेदकाअर्थरूप जोनिर्विशेषअद्वितीयब्रह्महै तिसब्रह्मकूं जोपुरुष मैंपरमेश्वरकेअनुग्रहतैं तथा ब्रह्मवेत्तागुरुकेअनुग्रहतैं आपणाआत्मारूपकरिकै जानैहै ताकानाम वेदवित्है ॥ ऐसा ब्रह्मवेत्तापुरुषहै ॥ सोब्रह्मवेत्तापुरुषभी मैंपरमेश्वरहींहूं ॥ यहवार्त्ता (ज्ञानीत्वात्मैवमेमतम्) इसवचनकरिकै पूर्वभीकथनकरिआयेहैं ॥ तहां (सर्वस्यचाहंहृदिसंनिविष्टः) इसवचनकरिकै सर्वप्राणीमात्रकूंआपणाआत्मारूपकरिकै श्रीभगवान्‌नैं जोपुनःवेदांतकृत्मैंहूं तथावेदवित्मैंहूं यहवचन कथनकऱ्याहै ॥ सो इसअर्थकेबोधनकरणेवासतै कथनकऱ्याहै ॥ मूढपुरुषोंनैं तथाबुद्धिमान्पुरुषोंनैं वेदांतशास्त्रकेउपदेशकर्त्तागुरुविषे तथाअन्यभी ब्रह्मवेत्तापुरुषोंविषे परमेश्वरबुद्धि अवश्यकरिकैकरणी इति ॥ तहां (यदादित्यगतंतेजो) इत्यादिकवचनोंकरिकै मुमुक्षुजनकृतउपासनावासतैं श्रीभगवान्‌नैं आपणीविभूति कथन करी ॥ साविभूतिहीं परमेश्वरका पारमार्थिकरूपहोवैगा ॥ ऐसीशंकाकेप्राप्तहुए श्रीभगवान् आपणेयथार्थस्वरूपकेबोधनकरणेवासतै कहेहै (वेदैश्चसर्वैरहमेववेद्यःइति) हेअर्जुन ऋग् यजुष् साम अथर्वण इनच्यारिवेदोंविषेस्थित जितनाकी उपनिषदरूपवेदांतहैं ॥ तिनवेदांतोंकरिकै मैंपरमात्मादेवहीं जानणेयोग्यहूं ॥ अर्थात् (सत्यंज्ञानमनंतंब्रह्म विज्ञानमानंदंब्रह्म आनंदोब्रह्म तदेतद्ब्रह्मापूर्वमनपरम् अस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घम् अप्राणममुखमश्रोत्रमवागमनोऽतेजस्कमचक्षुष्कमनामगोत्रमशब्दमस्पर्शमरूपमव्ययम् निष्कलंनिष्क्रियंशांतंनित्यंशुद्धंबुद्धंमुक्तंसत्यंसूक्ष्मंपरिपूर्णमद्वयंसदानंदचिन्मात्रंशांतंचतुर्थमन्यंते सआत्मासविज्ञेयः तत्त्वमसि ॥) इत्यादिकवचनोंकरिकै मुमुक्षुजनोंनैं जानणेयोग्य जो निर्विशेष नित्य शुद्ध बुद्धमुक्तस्वभाव सच्चिदानंद एकरसअद्वितीय परमात्मादेवहै ॥ सोपरमात्मादेवरूपहीं मैंपरमार्थतैंहूं ॥ पूर्वउक्तमायोपाधिकस्वरूप मैंपरमार्थतैंनहीं इति ॥ १५ ॥ ❀ ॥ इसप्रकार आपणे सोपाधिकस्वरूपकूंकथनकरिकै श्रीभगवान् कृपाकरिकै अर्जुनकेतांईक्षरअक्षरनामा कार्यकारणरूपदोउपाधियोंतैं रहित निरुपाधिशुद्धआपणेस्वरूपकूं तीनश्लोकोंकरिकैप्रतिपादनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) द्वाविमौपुरुषौलोकेक्षरश्चाक्षरएवच ॥ क्षरःसर्वाणिभूतानिकूटस्थोऽक्षरउच्यते ॥ १६ ॥ द्वौ । इमौ । पुरुषौ । लोके । क्षरः । च । अक्षरः । एव । च । क्षरः । सर्वाणि । भूतानि । कूटस्थः । अक्षरः । उच्यते ॥ १६ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन संसारविषे यह दो हीं पुरुषहैं एकतौ क्षरपुरुषहै तथा दूसरा अक्षरपुरुषहै तहां कार्यरूपसर्व भूततौं क्षरपुरुष कह्या जावैहै और कारणरूपमाया अक्षरपुरुष कह्याजावैहै ॥ १६ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन चैतन्यपुरुषका उपाधिरूपहोणेतैं पुरुषशब्दकरिकैकथनकऱ्येहुए दोपुरुषहीं इससंसारविषेहैं ॥ कौंनहैं तेदोपुरुष ऐसीअर्जुनकीजिज्ञासाकेहुए श्रीभगवान् कहेहै (क्षरश्चाक्षरएवचइति) हेअर्जुन एकतौं क्षरनामापुरुषहै ॥ और दूसरा अक्षरनामापुरुषहै ॥ अर्थात् उत्पत्तिविनाशवाला जितनाकी कार्यसमूहहै ॥ सोकार्यसमूहतौं क्षरनामापुरुषहै ॥ और आत्मज्ञानतैंविना विनाशतैंरहित तथाक्षरनामापुरुषकेउत्पत्तिकाबीजरूप ऐसी जा भगवत्कीमायाशक्ति है ॥ साकारणउपाधिरूप मायाशक्ति दूसरा अक्षरनामापुरुषहै ॥ इसीप्रकारके तिनदोनोंपुरुषोंकेस्वरूपकूं श्रीभगवान् आपहीं स्पष्टकरिकैकथनकरेहै (क्षरः सर्वाणिभूतानि इति ॥ हेअर्जुन उत्पत्तिविनाशकवाले जितनेंकी कार्यहैं ॥ तेसर्वकार्यतौं क्षरः इसनामकरिकैकह्येजावैहैं ॥ और कूटस्थ अक्षर इसनामकरिकैक ह्याजावैहै ॥ तहां यथार्थवस्तुका आच्छादनकरिकै अयथार्थवस्तुकाजोप्रकाशनहै जिसकूं वंचनभीकहेहैं तथामायाभीकहेहै ताकानाम कूटहै ॥ तिसकूटरूपकरि कैंजोस्थितहोवै ताकानाम कूटस्थहै ॥ अर्थात् आवरणशक्ति विक्षेपशक्ति इनदोनोंरूपोंकरिकै जो स्थितहोवै ताकानाम कूटस्थहै ॥ ऐसेकूटस्थनामवाली भगव त्कीमायाशक्तिरूप कारणउपाधिहै ॥ सामायाशक्तिरूप कारणउपाधि इससर्वसंसारकाबीजरूपहोणेतैं तथा आत्मज्ञानतैंविना अन्यउपायकरिकै नहींनाशहोणेतैं अनंतहै ॥ यातैं सामायाशक्तिरूप कारणउपाधि अक्षर इसनामकरिकैकहीजावैहै इति ॥ और किसीटीकाविषेतौं क्षरशब्दकरिकै सर्वअचेतनवर्गकाग्रहणकरिकै (कूटस्थोऽक्षरउच्यते) इसवचनकरिकै क्षेत्रज्ञनामा जीवात्माका ग्रहणकऱ्याहै ॥ सोयहव्याख्यान समीचीननहींहै ॥ काहेतैं (उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः) इसवक्ष्यमाण वचनकरिकै तिसक्षेत्रज्ञआत्माकूंहीं पुरुषोत्तमरूपकरिकैप्रतिपादनकऱ्याहै ॥ यातैं ईहां क्षर अक्षर इनदोशब्दोंकरिकै कार्यउपाधिकारणउपाधि यहदोनोंजडउपाधि हीं ग्रहणकरणेयोग्यहैं इति ॥ १६ ॥ ❀ ॥ तहां पूर्वश्लोकविषे क्षरशब्दकरिकै सर्वकार्यरूपउपाधिका कथनकऱ्या ॥ और अक्षरशब्दकरिकै भगवत्की मायाशक्तिरूप कारणउपाधिका कथनकऱ्या ॥ अब इसश्लोकविषे तिनक्षरअक्षररूपदोनोंउपाधियोंतैंविलक्षण तथातिनदोनोंउपाधियोंकेदोषोंकरिकैअलिपायमान ऐसाजो नित्य शुद्धबुद्ध मुक्तस्वभाव उत्तमपुरुषहै तिसउत्तमपुरुषका श्रीभगवान् कथनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) उत्तमःपुरुषस्त्वन्यःपरमात्मेत्युदाहृतः ॥ योलोकत्रयमाविश्यविभर्त्यव्ययईश्वरः ॥ १७ ॥ उत्तमः । पुरुषः । तु । अन्यः । परमात्मा । इति । उदाहृतः । यः । लोकत्रयम् । आविश्य । विभर्त्ति । अव्ययः । ईश्वरः ॥ १७ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हे अर्जुन पुनः अत्यंतउत्कृष्ट चेतनपुरुषतौं तिसअक्षरदोनोंतैं भिन्नहींहै तथा परमात्मा इसनामकरिकै कथनकऱ्याहै जोचेतनपुरुष तीनलोकोंकूं स्वांश्रितकरिकै धारणकरेहै तथाअव्ययरूपहै तथाईश्वररूपहै ॥ १७ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन अत्यंतउत्कृष्ट प्रत्यक्‌चेतनआत्मारूपपुरुषतौं अन्यहींहै ॥ अर्थात् क्षरशब्दकरिकैकथनकऱ्याजो कार्यसमूहहै ॥ तथाअक्षरशब्दकरिकैकथनकऱ्याजो मायारूपकारणउपाधिहै ॥ तिनदोनोंजडउपाधियोंतैं अत्यंतविलक्षण तथा तिनदोनों उपाधियोंकाप्रकाशकरणेहारा प्रत्यक्‌चेतनस्वरूप उत्तमपुरुष तीसराहींहै ॥ जोचेतनपुरुष वेदांतशास्त्रोंविषे परमात्माइसनामकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ अर्थात् अन्नमय प्राणमय मनोमय विज्ञानमय आनंदमय यहजेपंचकोशहैं ॥ जेपंचकोश अज्ञानकरिकै तिनतिनवादियोंनैं आत्मारूपकरिकै कल्पनाकरेहैं ॥ ऐसेपंचकोशोंतैंजो परमहोवै तथाआत्माहोवे ताकानाम परमात्माहै ॥ तहां सोचेतनरूप उत्तमपुरुष अकल्पितहोणेतैं तिनकल्पितपंचकोशोंतैं अत्यंतउत्कृष्टहोणेतैं परमहै ॥ तथा (ब्रह्मपुच्छंप्रतिष्ठा) इसश्रुतिनैं सर्वकाअधिष्ठानरूपकरिकै कथनकऱ्याहै तथा सर्वभूतोंका प्रत्यक्‌चेतनरूपहै ॥ इसकारणतैं वेदांतशास्त्रोंविषे सोचेतनरूपउत्तमपुरुष परमात्माइसनामकरिकै कथनकऱ्याहै इति ॥ हेअर्जुन जोपरमात्मादेव भूर्लोक भुवर्लोक स्वर्लोक इनतीनलोकरूपसर्वजगत्‌कूं आपणीमायाशक्तितैं स्वाश्रितकरिकै आपणीसत्तास्फूर्तिदेकरिकै धारणकरेहै तथापोषणकरेहै ॥ तहांश्रुति ॥ (व्यक्ताव्यक्तंभरतेविश्वमीशः)॥अर्थयह ॥ कार्यकारणरूपसर्वजगत्‌कूं परमेश्वर धारणकरेहै तथाभरणकरेहै इति ॥पुनः कैसाहै अव्ययहै॥अर्थात् जन्ममरणादिकसर्वविकारोंतैंशून्यहै ॥ तथा ईश्वरहै ॥ अर्थात् सूर्यचंद्रादिकसर्वजगत्‌कानियंता नारायणरूपहै ॥ ऐसाउत्तमपुरुष वेदांतोंविषे परमात्मा इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तहांश्रुति ॥ (सउत्तमः पुरुषः ॥) अर्थयह ॥ सोपरमात्मादेवहीं उत्तमपुरुषहै इति ॥ ईहां प्रत्यक्‌चेतनरूपआत्माके जे (अव्ययःईश्वरः) यहदो विशेषण कथनकऱ्येहैं ॥ तेदोनोंविशेषण हेतुगर्भितविशेषणहैं ॥ ताकरिकै यहदोअनुमान सिद्धहोवैहैं ॥ चेतन आत्मा तिसपूर्वउक्तअक्षरनामादोपुरुषोंतैं भिन्नहोणेकूंयोग्यहैं अव्ययहोणेतैं ॥ जोवस्तु तिनक्षरअक्षरदोनोंतैंभिन्ननहींहोवैहै सोवस्तु अव्ययभीनहींहोवैहै जैसे बुद्धिआदिकहै इति ॥ तथा चेतन आत्मा तिनक्षरअक्षरदोनोंतैं भिन्नहोणेकूंयोग्यहै ईश्वरहोणेतैं ॥ जैसे प्रजाकानियंता महाराजा तिसप्रजातैंभिन्नहींहोवैहै इति ॥ १७॥ ❁ ॥ अब पूर्वकथनकऱ्याजो क्षरअक्षरदोनोंतैंविनाविलक्षण परमात्मादेवहै ॥ तिसपरमात्मादेवका पुरुषोत्तम यहप्रसिद्धनाम कथनकरिकै ऐसापरमात्मादेव मैंहींहूं इसप्रकारतै श्रीभगवान् आपणेस्वरूपकूं दिखावैहै (ब्रह्मणोहि प्रतिष्ठाहं तद्धामपरमंमम) इत्यादिकवचनों करिकै पूर्वकथनकऱ्येहुए आपणे महिमाके निश्चयकरावणेवासतै ॥

(मू०श्लो०) यस्मात्क्षरमतीतोहमक्षरादपिचोत्तमः॥अतोऽस्मिलोकेवेदेचप्रथितःपुरुषोत्तमः॥१८॥यस्मात् । क्षरम् । अतीतः अहम् ।
अक्षरात् । अपि । च । उत्तमः । अतः । अस्मि । लोके । वेदे । च । प्रथितः । पुरुषोत्तमः ॥ १८॥ (इतिपदच्छेदः)॥ हेअर्जुन

जिसकारणतैं मैंपरमेश्वर क्षरकूं अतिक्रमणकरताभयाहूं तथा अक्षरतैं भी अत्यंतउत्कृष्टहूं इस कारणतैं लोकंविषे तथा वेदविषे पुरुपोत्तम इसनामकरिकै प्रसिद्ध हूंआहूं ॥ १८ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन कार्यरूपहोणेतैं विनाशवान् तथास्वप्नादिकोंकीन्यांई मायामय ऐसाजो अश्वत्थनामा यहसंसारवृक्षहै ॥ तिस संसारवृक्षरूप क्षरकूं मैंपरमेश्वर जिसकारणतैं अतिक्रमणकरताभयाहूं ॥ तथा माया अविद्या अज्ञान भगवत्शक्ति इत्यादिकनामोंकरिकैप्रसिद्ध जो अव्याकृतरूपकारणहै ॥ जिसअव्याकृत रूपकारणकूं । (अक्षरात्परतःपरः ।) इसश्रुतिविषे अक्षर इसनामकरिकैकथनकऱ्याहै ॥ तथा जोमायारूपअक्षर इससंसारवृक्षकाबीजरूपहै ॥ ऐसे सर्वजगत्केकारणरूप मायानामाअक्षरतैंभी मैंपरमेश्वर उत्तमहूं ॥ अर्थात् चैतन्यरूपहोणेतैं मैंपरमेश्वरतिसजडरूपअक्षरतैं अत्यंतउत्कृष्टहूं ॥ इसकारणतैं अर्थात् चेतनपुरुषका उपाधिरूप जे क्षरअक्षरदोनोंहैं जेक्षरअक्षरदोनों चेतनपुरुषकेतादात्म्यअध्यासतैं पुरुष इसनामकरिकैकह्येजावैहैं ऐसेक्षरअक्षररूपदोनोंउपाधियोंतैं अत्यंतउत्कृष्टहोणेतैं मैंपरमेश्वर इसलोकविषे तथा वेदविषे पुरुषोत्तम इसनामकरिकै प्रसिद्धहुआहूं ॥ तहां कविपुरुषोंकरिकैरचितकाव्यादिरूपलोकविषेतौ । (हरिर्यथैकःपुरुषोत्तमः ।) इत्यादिकवचनोंकरिकै मैंपरमेश्वर पुरुषोत्तम इसनामकरिकैप्रसिद्धहूं ॥ और वेदविषेतौ । (सउत्तमःपुरुषः इत्यादिकवचनोंकरिकै मैंपरमेश्वर पुरुषोत्तम इसनामकरिकै प्रसिद्धहूं इति ॥ १८ ॥ ❁ ॥ अब श्रीभगवान् पूर्वउक्तअर्थसहित तिसपुरुषोत्तमनामकेज्ञानकाफल वर्णनकरेहै ॥

(मू० श्लो०) योमामेवमसंमूढोजानातिपुरुषोत्तमम् ॥ ससर्वविद्भजतिमांसर्वभावेनभारत ॥ १९ ॥ यः । माम् । एवम् । असंमूढः । जानाति । पुरुषोत्तमम् । सः । सर्ववित् । भजति । माम् । सर्वभावेन । भारत ॥ १९ ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेअर्जुन जोपुरुष संमोहतैंरहितहुआ मैंपरमेश्वरकूं इसप्रकार पुरुषोत्तमरूप जानताहै सोपुरुषहीं सर्वज्ञहोवैहै तथाभक्तियोगकरिकै मैंपरमेश्वरकूं सेवनकरेहै ॥ १९ ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअर्जुन जोअधिकारीपुरुष असंमूढहुआ अर्थात् यहकृष्णभी कोईमनुष्यविशेषहींहै याप्रकारकेसंमोहतैं रहितहुआ मैंपरमेश्वरकूं पुरुषोत्तमनामकेअर्थज्ञानपूर्वक पुरुषोत्तमरूपहीं जानैहै मनुष्यरूपजानतानहीं ॥ सोअधिकारीपुरुषहीं मैंपरमेश्वरकूं निरतिशयप्रेमलक्षणभक्तियोगकरिकै सेवनकरेहै ॥ तथा सोअधिकारी पुरुषहीं सर्ववित्है ॥ अर्थात् मैंपरमेश्वरकूं सर्वकाआत्मारूपकरिकैजानणेहारा सोपुरुषहीं सर्वज्ञहै ॥ यातैं (मांचयोऽव्यभिचारेणभक्तियोगेनसेवते ॥ सगुणान्समतीत्यैतान्ब्रह्मभूयायकल्पते) यहजोपूर्ववचनकह्याथा सोवचन युक्तहींहै ॥ तथा (ब्रह्मणोहिप्रतिष्ठाहम्) यहजोवचन पूर्व कथनकऱ्याथा सोवचनभी युक्तहींहै इति ॥ १९ ॥ ❁ ॥ अब श्रीभगवान् इसपंचदशअध्यायकेअर्थकीस्तुतिकरताहुआ इसअध्यायकाउपसंहारकरेहै ॥

(मू० श्लो०) इतिगुह्यतमंशास्त्रमिदमुक्तंमयानघ ॥ एतद्बुद्ध्वाबुद्धिमान्स्यात्कृतकृत्यश्चभारत ॥ २० ॥ इतिश्रीमद्भग०सूपनि० ब्रह्मविद्यायां योगशास्त्रे श्रीकृष्णार्जुनसंवादे पुरुषोत्तमयोगो नामपंचदशोऽध्यायः समाप्तः ॥ १५ ॥ इति । गुह्यतमम् । शास्त्रम् । इदम् । उक्तम् । मया । अनघ । एतत् । बुद्ध्वा । बुद्धिमान् । स्यात् । कृतकृत्यः । च । भारत ॥ २० ॥ (इतिपदच्छेदः) ॥ हेसर्वव्यसनोंतैंरहित भारत मैंभगवान्नैं तुमारेप्रति इसंपूर्वउक्तप्रकारकरिकै अत्यंतरहस्यरूप तथासंपूर्णशास्त्ररूप यहँ पंचदश अध्याय कथनकऱ्याहै इसकूं जानिकै यहपुरुष आत्मज्ञानवाला होवैहै तथा कृतकृत्य होवैहै ॥ २० ॥ (इतिपदार्थः) ॥

॥ टीका ॥ हेअनघ अर्थात् हेसर्वव्यसनोंतैंरहित ॥ तथा हेभारत अर्थात् हेभरतवंशविषेउत्पन्नहुएअर्जुन ॥ मैंभगवान्नैं तैंअर्जुनकेप्रति इसपंचदशेअध्यायविषे पूर्वउक्तप्रकारकरिकै अत्यंतरहस्यरूप संपूर्णशास्त्रहीं संक्षेपकरिकै कथनकऱ्याहै ॥ अर्थात् अष्टादशअध्यायरूपसर्वगीताशास्त्रका जितनाकीअर्थहै ॥ सोसंपूर्णअर्थ हमनैं संक्षेपकरिकै इसपंचदशेअध्यायविषे तुमारेप्रति कथनकऱ्याहै ॥ यातैं इसपंचदशेअध्यायकेअर्थकूं ब्रह्मवेत्तागुरुकेमुखतैं निश्चयकरिकै यहअधिकारीपुरुष बुद्धिमान्होवैहै ॥ अर्थात् मैंब्रह्मरूपहूं इसप्रकारकेआत्मज्ञानवालाहोवैहै ॥ तथा सोअधिकारीपुरुष कृतकृत्यभीहोवैहै ॥ तहां इसअधिकारीपुरुषकूं तिसतिसवर्ण आश्रमविषे करणेयोग्य जितनैंकी शुभकर्महैं तेसर्वशुभकर्म कऱ्येहुएहैं जिसपुरुषनैं अर्थात् जिसपुरुषकूं पुनःकोईकर्म करणेयोग्यरह्यानहीं तापुरुषकानाम कृतकृत्यहै ॥ तात्पर्ययह ॥ श्रेष्ठकुलविषेजन्मकूंप्राप्तहुए ब्राह्मणनैं जोजोशास्त्रविहितकर्म करणेयोग्यहै सोसर्वकर्म परमात्मादेवकेसाक्षात्कारहुए कऱ्याजावैहै ॥ तिस परमात्मादेवकेसाक्षात्कारतैंविना किसीभीपुरुषके तिनकर्त्तव्यकर्मोंकीसमाप्ति होतीनहीं ॥ ईहां (हेअनघ हेभारत) इनदोसंबोधनोंकरिकै श्रीभगवान् अर्जुनकेप्रति यहअर्थ सूचनकरताभया ॥ इसपंचदशेअध्यायकेअर्थकूंजानिकै जबी साधारणपुरुषभी आत्मज्ञानवालाहोइकै कृतकृत्यहोवैहै ॥ तबी तूंअर्जुनतौ महाकुलविषे जन्मकूंप्राप्तहुआहैं तथाआप सर्वव्यसनोंतैंरहितहैं ॥ यातैं कुलकेगुणोंकरिकै तथाआपणेगुणोंकरिकै युक्तहुआ तूंअर्जुन इसपंचदशेअध्यायकेअर्थकूंजानिकै आत्मज्ञानवालाहोइकै कृतकृत्यहोवैंगा याकेविषे क्याकहणाहै इति ॥ और (हेअनघ) इससंबोधनकरिकै श्रीभगवान्नैं यहभीअर्थ सूचनकऱ्या ॥ सर्वव्यसनोंतैंरहित अधिकारीपुरुषकेप्रतिहीं ब्रह्मवेत्तागुरुनैं यहअत्यंतगुह्यब्रह्मविद्या उपदेशकरणी ॥ व्यसनोंवाले पुरुषकूं यहब्रह्मविद्या उपदेशकरणीनहीं इति ॥ २० ॥ ❀ ॥ इतिश्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यश्रीस्वाम्युद्धवानंदगिरिपूज्यपादशिष्येण स्वामिचिद्घनानंदगिरिणा विरचितायां प्राकृतटीकायां गीतागूढार्थदीपिकाख्यायां पंचदशोऽध्यायःसमाप्तः ॥ १५ ॥ श्रीगुरुभ्योनमः ॥ श्रीकाशीविश्वेश्वराभ्यांनमः ॥ श्रीशंकराचार्येभ्योनमः ॥

॥ छ ॥ ॥ छ ॥